मई 2026

दादावाणी

Retail Price ₹ 20

पति-पत्नी की पसंदगी में आपको पसंद हो ऐसा होना चाहिए। आपके मन को पसंद हो ऐसा होना चाहिए। बुद्धि की लिमिट में आ जाना चाहिए। अहंकार एक्सेप्ट करे ऐसा होना चाहिए और चित्त आकर्षित हो ऐसा होना चाहिए। यानी उसका हिसाब हो तभी अट्रैक्शन होता है। कुदरत के हिसाब बिना कोई शादी नहीं कर सकता।

अडालज : पूज्य नीरूमाँ की 20वीं पुण्यतिथि : ता. 19 मार्च 2026

अडालज : सेवार्थी शिविर : ता. 20 से 22 मार्च 2026

अडालज : स्टॉप एन्ड स्टे-2 का खातमुहूर्त : ता. 22 मार्च 2026

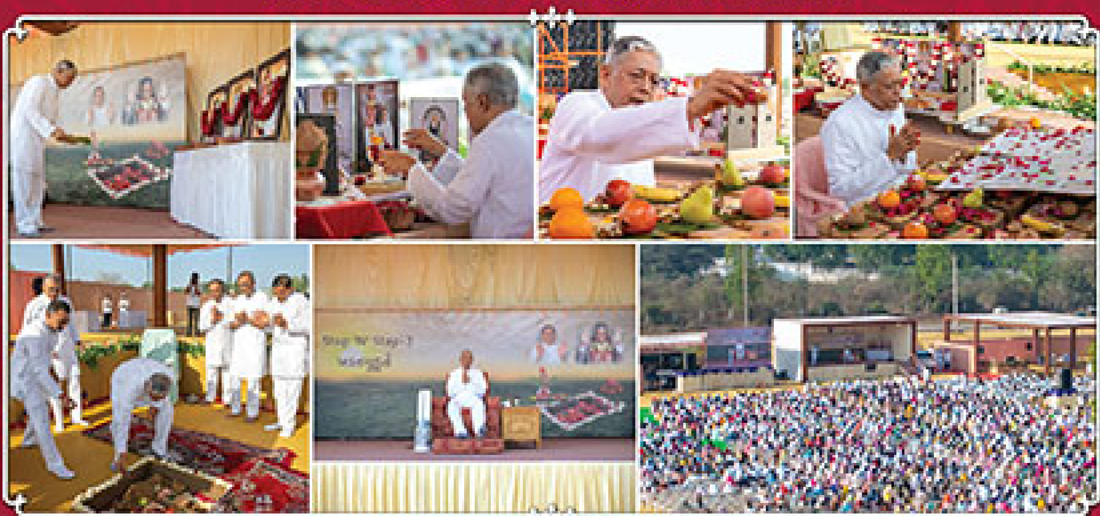

वर्ष : 21 अंक : 7
अखंड क्रमांक : 247
मई 2026
पृष्ठ - 32

Editor : Dimple Mehta
© 2026
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Multiprint
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421
संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500
सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
5 साल
भारत : 1000 रुपये
वार्षिक
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

जीवनसाथी की पसंदगी में युवाओं की सही समझ -2

संपादकीय

युवावस्था में जीवनसाथी की पसंदगी वह बहुत ही महत्वपूर्ण और संवेदनशील निर्णयों में से एक है। जब युवा-युवतियाँ विवाह के बंधन में बंधने के लिए पात्र ढूँढना शुरू करते हैं, तब पसंदगी कैसे करें? कौन-कौन सी बाबतें देखें? गुण-अवगुण को कैसे परखें? ऐसे कई प्रश्न मन में उठते हैं। प्रस्तुत अंक में परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) ऐसी दुविधाभरी क्षणों में युवाओं को जीवनसाथी की पसंदगी के लिए उच्च व्यावहारिक समझ देते हैं, जो उनके जीवन को योग्य दिशा दे सकेगी।

जीवनसाथी की पसंदगी का मुख्य आधार क्या होना चाहिए? दादाश्री एक सरल फिर भी गहन चाबी देते हुए कहते हैं, 'आँखों से आकर्षण हो जाए, वहाँ आपको शादी तय करनी चाहिए और आकर्षण न हो तो आपको नहीं करनी चाहिए।' यह आकर्षण वह पूर्वजन्म के हिसाब का परिणाम है। आकर्षण के साथ चरित्र बहुत उच्च चीज़ है। आजकल के युवा पात्र की पसंदगी में कई बार बाहरी दिखावे को ज़्यादा महत्व देते हैं, परंतु सहज ही देखने पर जो मिल जाए, वही सही है। 'प्लानिंग किए बिना का काम वह शुद्ध डिस्चार्ज है!'

लव मेरिज या अरेन्ज मेरिज? क्या लव मेरिज को पाप माना जाता है? उसमें दादाश्री कहते हैं कि टेम्परारी मेरिज को पाप माना जाता है लेकिन पूरी लाइफ के लिए परमानेन्ट मेरिज को पाप नहीं माना जाता। क्षणिक आवेश में लव (प्रेम) हो जाए और फिर मतभेद होते ही अलग हो जाए वह सही नहीं है। इसलिए माता-पिता के अनुभवों को ध्यान में रखकर तय करना चाहिए और साथ ही युवक-युवती के मन को पसंद हो, अहंकार स्वीकार करे और चित्त आकर्षित हो ऐसा पात्र होना भी ज़रूरी है।

आजकल के युवाओं को सबसे बड़ा डर यह होता है कि शादी करेंगे तो हमारा मोक्ष का काम भूल जाएँगे! तब दादाश्री कहते हैं कि यदि शादी करने की इच्छा हो तो डरना मत। 'तू जिससे शादी करेगा' उसे मैं आशीर्वाद दूँगा और तेरा सब ठीक कर दूँगा। इसलिए तय करके रख ले अब'। महात्माओं को कई बार प्रश्न होता है कि ब्रह्मचर्यवालों को ज्ञान जल्दी आता है और शादीशुदा लोगों को ज्ञान देर से आता है, तब दादाश्री कहते हैं कि वास्तव में ऐसा नहीं है लेकिन यह ज्ञान और ज्ञानी की आज्ञा हो तो मोक्ष में जा सकते हैं।

दादाश्री कहते हैं शादी का नाम ही तोड़-ज़ोड़ है। मनुष्यमात्र को डेवलप करने का साधन है। टकराकर अनुभव करके सभी आगे बढ़ते हैं। शादी करके पछताने से अनुभव ज्ञान होता है। शादी वह मौज़-शौक के लिए नहीं है बल्कि एक-दूसरे को मोक्षमार्ग में हेल्पफुल होने के लिए है। जब किसी को भी जीवनसाथी के साथ मतभेद या प्रपंच जैसी परिस्थितियाँ आए तब सामने प्रपंच करने के बजाय ज्ञानी की यह व्यावहारिक समझ प्राप्त करके, शीलवान बनकर, 'समभाव से *निकाल*' करके मोक्षमार्ग में आगे बढ़ा जा सके, यही हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

जय सच्चिदानंद

जीवनसाथी की पसंदगी में युवाओं को सही समझ -2

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

'आकर्षण होना', मुख्य नियम इतना ही

प्रश्नकर्ता : युवा-युवतियों को शादी करने से पहले स्त्री (पत्नी) या पुरुष (पति) की पसंदगी कैसे करना चाहिए? और क्या करें, क्या देखें, गुण कैसे देखें, उसकी चर्चा कीजिए।

दादाश्री : यहाँ अमेरिका से सभी इन्डिया आते हैं, वे सबसे पहले पेपर में छपवाते हैं कि ग्रीनकार्डवाले आए हैं। इसका विज्ञापन करते हैं कि कौन सा माल बेचना है! ग्रीनकार्डवाला माल बेचना है। तो वह लड़की समझती है कि यह माल अच्छा है, वहाँ (अमेरिका) जाकर हम मज़े करेंगे। तो लड़की के पिताजी दिखाने के लिए बारी-बारी से आते हैं, गठरियाँ उठा-उठाकर, वह लड़का तो मना ही करता रहता है। अठाईस दिन के लिए आए होते हैं। फिर एक लड़के के फादर तो तंग आ गए थे। वे मुझसे कहते हैं कि, मैं आया तब से हर जगह लोगों की (लड़कियाँ) देखता रहता है और मुझे लोगों के सामने शर्मिंदा करता है। कितनी सुंदर-सुंदर लड़कियाँ दिखाई, तो भी मना कर दिया। तो इसे कैसी लड़की चाहिए? मैंने कहा, 'लड़के से अकेले में कहना कि तेरी माँ को इस तरह नहीं लाया था'। फिर मैंने उन्हें आश्वासन दिया। अब इस लड़के के बेचारे के हाथ में सत्ता नहीं हैं, वह भी बेचारा परसत्ता से बोलता है।

फिर एक दिन लड़का ही सामने से कहता है, मेरे आठ दिन बचे हैं। पापा, अब आपको लड़की दिखानी हो तो दिखा दो, वर्ना फिर मैं चला जाऊँगा। तब उसके फादर कहते हैं, 'भाई, तू मना करता है तो अब मैं क्या दिखाऊँ?' वह लड़का कहता है, 'फिर भी एक-दो दिखा दो।' इसलिए पापा ने किसी को हाँ कह दिया। तब वह क्या कहता है? मैं किसी के घर लड़की नहीं दिखाऊँगा, बुरा लगेगा। मैं तो आणंद स्टेशन पर दिखाऊँगा। वहाँ इस लड़के को लेकर आना।

तब इन्हें ज़रूरत थी इसलिए स्टेशन पर ले आए। किसी के घर जाए लेकिन नापसंद करे तो लोगों में बदनामी हो जाती है न! अच्छी लड़की को वह नापसंद करता था! अपनी माँ को नहीं देखता था, ब्लैकिश (काली) थी फिर भी! तो फिर स्टेशन पर लड़की दिखाई। वह लड़का कहता है, 'बस इसी से शादी कर दो। यही मुझे पसंद है। यहाँ पर ही कर दो न, अब!' 'अरे, यह तो स्टेशन है। प्लेटफ़ॉर्म पर यहाँ शादी हो सकती है क्या?' तब वह कहता है, 'नहीं। यही, यहीं पर जल्दी से कर दो।' तब वे कहते हैं, 'नहीं हो सकती, उसके लिए तो मुहूर्त निकालना पड़ता है और इस तरह स्टेशन पर नहीं हो सकती।' तो फिर उसे समझा-बुझाकर दो दिन के बाद शादी तय कर दी और बाहर हॉल था वहाँ शादी कर दी। अब यह तो वहीं का वहीं स्टेशन पर शादी करने के लिए कह रहा था, वह कैसे हो सकता है? वह हो सकता है क्या? लेकिन ऐसा भान बगैर बोलते हैं!

इसलिए यह सब क्या है, वह बहुत देखने की ज़रूरत नहीं है। लड़का-लड़की देखने जाएँ और आकर्षण न हो तो नहीं करना। अन्य डिज़ाइन देखने की ज़रूरत नहीं है, आकर्षण होता है या नहीं इतना ही देखना है।

प्रश्नकर्ता : किस तरह का आकर्षण!

दादाश्री : यह आँखों का आकर्षण होता है भीतर, अट्रैक्शन होता है। आप बाजार में कोई चीज़ लेने गए हों, तो उस चीज़ का अट्रैक्शन (आकर्षण) न हो तो, आप ले ही नहीं सकते। यानी उसका हिसाब हो तभी अट्रैक्शन होता है। कुदरत के हिसाब के बिना कोई शादी नहीं कर सकता। इसलिए अट्रैक्शन होना चाहिए।

लड़कों को समझाओ कि शादी करने का तरीका क्या होता है? तुझे जाकर लड़की को देखना है और आँखों से आकर्षण हो जाए वहाँ आपकी शादी तय ही है और आकर्षण न हो तो नहीं करना क्योंकि आपकी और उसकी शादी होनेवाली हो तो अट्रैक्शन होगा। वह काली हो तो भी अट्रैक्शन होगा।

यानी आपको भीतर आकर्षण महसूस हो, तो वहाँ शादी करना। दो-तीन बार जाँच करना और आकर्षण न हो, तो वह केन्सल।

प्रश्नकर्ता : दो-चार बार मिलना चाहिए क्या?

दादाश्री : मिल सकते हैं, ऐसे संयोग हों तो भी हर्ज़ नहीं। न हो तो भी हर्ज़ नहीं। लेकिन आकर्षण होना चाहिए। मुख्य 'लॉ' (नियम) इतना ही है!

पहले तो क्या करते थे? बिना देखे ही यों ही तय कर आते थे। हमारे समय में तो पंडित जाकर तय कर आते थे। पंडित यानी अपने जो ब्राह्मण होते हैं न, वे जहाँ से रिश्ता आता था न, वहाँ वे पंडित जाते थे और फिर लड़की की उम्र वगैरह सबकुछ पूछकर आते थे।

पहले विचार, फिर कार्य

यह 'कमिंग इवेन्ट्स' ऐसा साफ लिखो न, कमिंग इवेन्ट्स कास्ट देर शैडोज़ बिफ़ोर। (जो होनेवाला है उसके स्पंदन पहले आते हैं) मुझे ज्ञान नहीं हुआ था न, तब ऐसे सब विचार आते थे, उससे पहले मैं समझ जाता था कि कुछ अच्छा होनेवाला है। वर्ना फिर ये विचार क्यों आए? इसलिए सही लिखा कि 'कमिंग इवेन्ट्स कास्ट देर शैडोज़ बिफ़ोर।' ये सारे शैडोज़ ही कहलाते हैं, उसके प्रतिबिंब कहलाते हैं।

लड़के को भी शादी के विचार आते हैं उसके बाद शादी करता है। दो-चार साल से विचार आते हैं उसके बाद शादी करता है, ऐसी लाऊँगा, वैसी लाऊँगा तब फिर शादी हो जाती है।

प्लानिंग किए बिना का काम वह शुद्ध डिस्चार्ज है! वह सहज स्वभावी है, उसमें फिर दुःख नहीं पड़ता! जबकि पाँच-सात लड़कियाँ देखता है, उसमें फिर बरकत नहीं आती! वह तो सहज ही देखे और मिल जाए वह सही है!

'काला' कहकर कैन्सल करे, फिर पछताए

हमारे एक महात्मा की बेटी ने क्या किया? अपने पिता से कहा कि, 'मुझे यह लड़का पसंद नहीं।' अब लड़का पढ़ा-लिखा था। वह लड़का, लड़की के माँ-बाप सबको पसंद आया था। इसलिए उसके पिताजी को अकुलाहट हो गई कि बड़ी मुश्किल से ऐसा अच्छा लड़का मिला है और यह लड़की तो मना कर रही है।

थका हुआ व्यक्ति फिर बबूल के नीचे बैठता है। थका हुआ व्यक्ति कहाँ बैठता है? बबूल के

नीचे! तब फिर क्या हो सकता है? फिर उसने मुझसे पूछा। तब मैंने कहा, 'उस लड़की को मेरे पास बुलाओ।' मैंने कहा, 'बहन, क्या हुआ मुझे बता न! क्या हर्ज है? लंबा लगता है? मोटा लगता है? पतला लगता है?' तब कहती है, 'नहीं, थोड़ा ब्लैकिश है।' मैंने कहा, 'वह तो मैं उजला कर दूँगा, तुझे और कोई दिक्कत है?' तब बोली, 'नहीं, और कुछ नहीं।' तब मैंने कहा, 'तू हाँ कर दे न! फिर मैं उसे उजला कर दूँगा।' फिर वह लड़की उसके पापा से कहने लगी कि, 'आप दादाजी तक मेरी शिकायत ले गए?' तब क्या करें फिर?

शादी के बाद मैंने पूछा, 'बहन, उजला करने के लिए साबुन मँगवा दूँ क्या?' तब उसने कहा, 'नहीं दादाजी, उजला ही है।' बिना वजह ब्लैकिश, ब्लैकिश कर रही थी! वह तो, कुछ काला लगाए तो काला नज़र आए और येलो (पीला) लगाए तो येलो (पीला) दिखेगा। वास्तव में लड़का अच्छा था। मुझे भी अच्छा लगा। उसे कैसे जाने दें? लड़की क्या समझी, ज़रा सा ढीला है। मैंने कहा, 'कर लेना बाद में, ऐसा फिर से नहीं मिलेगा!'

दादा के कहे अनुसार करें, वे हो जाएँ सुखी

एक लड़की को शादी ही नहीं करनी थी, उसके घरवाले मेरे पास उसे लेकर आए। तब मैंने उसे समझाया, शादी किए बिना चले, ऐसा नहीं है और शादी करके पछताए बिना चले, ऐसा नहीं है। इसलिए यह सब रोना-धोना रहने दे और मैं कहता हूँ उसके अनुसार तू शादी कर ले। जैसा वर मिले वैसा, परंतु वर तो मिला न! किसी भी प्रकार का दूल्हा चाहिए ताकि लोगों का उंगली उठाना टल जाए न! और किस आधार पर दूल्हा मिलता है वह मैंने उसे समझाया। वह लड़की समझ गई और मेरे कहे अनुसार शादी कर ली। पर फिर पति ज़रा देखने में अच्छा नहीं लगा। परंतु उसने कहा कि मुझे दादाजी ने कहा है इसलिए शादी करनी ही है। उस लड़की को शादी करने से पहले ज्ञान दिया और फिर तो उसने मेरे एक भी शब्द का उल्लंघन नहीं किया और वह लड़की एकदम सुखी हो गई।

रूप के बजाय चरित्र उच्च, समझो सही

प्रश्नकर्ता : आँखों के बजाय चरित्र बड़ी चीज़ नहीं है?

दादाश्री : चरित्र बहुत उच्च चीज़ है, चरित्र कहाँ देखते हैं लोग? आजकल के लोग तो बाहरी दिखावा ही देखते हैं। आँखों का वह सारा रूप देखते हैं। चरित्र जैसी कोई चीज़ ही नहीं समझते!

प्रश्नकर्ता : मेरा पॉइन्ट वहीं पर आकर रुक जाता है!

दादाश्री : सही कह रही हो। चरित्र ढूँढें तब तो बहुत अच्छा है। लेकिन पहले सभी को निकाल दिया, उनका 'चरित्र नहीं था' ऐसा क्यों मान लेती हो? गेट आउट किया सभी को, तूने कितने लड़कों को गेट आउट किया?

प्रश्नकर्ता : वह तो, उसका भी मुझे पछतावा होता है। अभी वह चीज़ अलग ही हो गई।

दादाश्री : वह छोड़ दो आप, लेकिन उस समय चरित्र देखती थी या और कुछ देखती थी?

प्रश्नकर्ता : तब तो ऐसा ही था कि शादी करनी ही नहीं है। अभी प्रॉब्लम वर्तमान की है। उस समय का अब 'लेट गो' ही कर देना है। वह मेरी भूल हुई और मैं उसका पछतावा करती हूँ।

दादाश्री : अब पछतावा हुआ, परंतु जैसा चरित्र ढूँढें वैसा नहीं मिल सकता न अब! और

मिल भी सकता है उसका पुण्य हो तो, इसलिए राह देखो आप। आँखों को पसंद न हो लेकिन चरित्र अच्छा हो तो चलेगा क्या?

प्रश्नकर्ता : दिखने में एकदम ही खराब हो ऐसा नहीं, साधारण होना चाहिए। लेकिन वह पढ़ा-लिखा हो, कमानेवाला हो, नौकरी-व्यापार करनेवाला हो ऐसा चलेगा।

दादाश्री : हाँ, साधारण, साधारण! चरित्र तो बहुत बड़ी चीज़ है। चरित्र ढूँढना वह बहुत बड़ी चीज़ है। वह अच्छी चीज़ कहलाती है।

चरित्र खराब हो, व्यसनी हो। सब प्रकार की परेशानियाँ हों। व्यसनी पसंद है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : बिल्कुल नहीं।

दादाश्री : यदि चरित्र अच्छा हो और व्यसनी हो तो?

प्रश्नकर्ता : सिगरेट तक चला सकते हैं।

दादाश्री : सही कहती है, वहाँ तक निभा सकते हैं। फिर उससे आगे का कैसे, वह ब्रांडी के कप भरकर पिए, वह कैसे पुसाए? उसकी सीमा होती है, सिगरेट तक चला लेना! और चरित्र तो बहुत बड़ी चीज़ है। क्या तुम मानती हो बहन, चरित्र में? क्या तुम चरित्र को पसंद करती हो?

प्रश्नकर्ता : उसके बिना जी ही कैसे सकते हैं?

दादाश्री : हाँ, देखो, इतना हिन्दुस्तान की स्त्रियाँ, लड़कियाँ समझें न, तो काम निकाल लेंगी। यदि चरित्र को समझें तो काम निकाल लेंगी।

प्रश्नकर्ता : हमारे इतने उच्च विचार अच्छे वाचन से हुए हैं।

दादाश्री : किसी के भी वाचन से, इतने अच्छे संस्कार पड़ गए न! अच्छे विचारों के!

नहीं है पाप लव मेरिज में, पाप है धोखा देने में

प्रश्नकर्ता : यह लव मेरिज पाप माना जाता है क्या?

दादाश्री : नहीं। टेम्परेरी लव मेरिज पाप माना जाता है, परमानेन्ट लव मेरिज हो तो नहीं। यानी पूरी लाइफ़ के लिए लव मेरिज हो तो हर्ज़ नहीं। टेम्परेरी लव मेरिज यानी फोर वन यर, फोर टू यर। शादी करनी हो तो एक से ही करनी चाहिए। बहुत लोगों से फ्रेन्डशिप नहीं करनी चाहिए, वर्ना नर्क में जाना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : ये कुछ अमेरिकन्स कहते हैं कि जैसे कई लड़कियाँ कितने ही लोगों से संबंध रखती हैं, तो उन लोगों को कोई हर्ज़ नहीं होता। उन लोगों को तो कोई पाप नहीं लगता और हमारे लिए क्यों ऐसा है?

दादाश्री : उन्हें लड़कियों की बहुत परवाह नहीं होती, वे तो (लड़की) न जाती हो तो बीस-बाईस साल की होने पर उसे अलग कर देते हैं। जबकि अपने यहाँ नहीं करते। उन्हें तो सिर्फ अपने कपल की ही परवाह होती है जबकि अपने यहाँ तो आखिर तक, आप पचास साल के हो जाओ तो भी लगाव रखते हैं माता-पिता। आप पचास साल के हो जाओ तो भी उन्हें दु:ख होता रहता है कि इस बेचारी के साथ क्या हो रहा होगा, क्या हो रहा होगा? जबकि अमेरिकन को नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : उन लोगों को क्यों ऐसा होता है? और हमें?

दादाश्री : उनका डेवेलपमेन्ट कच्चा है। सामाजिक डेवेलपमेन्ट नहीं है उनमें। सामाजिक डेवेलपमेन्ट कच्चा है।

लव मैरेज़, लेकिन माता-पिता की स्वीकृति से

प्रश्नकर्ता : तो कैसी मैरेज़ बेटर है, लाइक अरेन्ज मैरेज़ या लव मैरेज़? लव मैरेज़ करें या माता-पिता के तय किए अनुसार करें?

दादाश्री : कुदरती रूप से जो शादी होती है न, वह शादी अपने आप अनिवार्य रूप से तय की हुई ही होती है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, तो हम ढूँढकर लाए हो ऐसा भी हो सकता है। यानी यह जो आपने कहा न कि कुदरती रूप से तय की हुई होती है, तो इसका अर्थ ऐसा हुआ न कि माता-पिता ने तय की हो या तो हमने खुद तय की हो! दोनों हो सकते हैं न?

दादाश्री : तय करके माता-पिता को पसंद हो, इस तरह से काम करना चाहिए। ऐसा है न कि इस लव मेरिज में क्या होता है, कि फिर इसके साथ लव, इसके साथ लव, इसके साथ लव। उसके बाद दो-तीन साल में फिर रिश्ता टूट जाता है और फिर भटकना पड़ता है।

लव मेरिज अकेली पसंद करने जैसी चीज़ नहीं है। कल जाकर उसका मिजाज कैसा निकले वह कैसे पता चले? माता-पिता ढूँढ दें वह देखना, कि बेवकूफ लड़का है या डिफेक्टवाला है? बेवकूफ नहीं होना चाहिए! बेवकूफ होते हैं क्या?

आपको पसंद हो ऐसा होना चाहिए। आपके मन को पसंद हो ऐसा होना चाहिए। बुद्धि की लिमिट में आ जाना चाहिए। अहंकार एक्सेप्ट करे ऐसा होना चाहिए और चित्त आकर्षित हो ऐसा होना चाहिए। चित्त आकर्षित हो ऐसा होना चाहिए न? इसलिए वे तय करें तो हर्ज़ नहीं है, लेकिन उसे आपको देख लेना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी माता-पिता भी लड़का ढूँढने में गलती कर सकते हैं?

दादाश्री : उनका इरादा नहीं होता, उनका इरादा तो अच्छा ही करने का होता है। बाद में गलती हो जाए तो वह आपके प्रारब्ध का खेल है। क्या करें? और जब आप स्वतंत्र रूप से ढूँढते हो उसमें गलती होना संभव है। कई उदाहरण फेल हो गए हैं।

समय के अनुसार मिलते हैं

जल्दी से बहुत अच्छा पति मिल जाए, ऐसी इच्छा है क्या तेरी?

प्रश्नकर्ता : जल्दी नहीं चाहिए।

दादाश्री : लेकिन 'अच्छा मिल जाए' ऐसा तो तू कहती है न! और यह जगत् तो ऐसा है कि कोई बहन कहेगी, 'हे भगवान, खराब होगा तो भी चलेगा।' तो भी जो उसकी किस्मत में लिखा है वही मिलता है। क्योंकि किस्मत में लिखी हुई चीज़ ही मिलती है यह।

लड़के का जन्म तो हो गया है। कोई नया जन्म नहीं लेगा। जन्म हो गया है, लेकिन मिलता नहीं है और जो है वह मिलनेवाला है। लेकिन मिलता नहीं है, उसका कारण टाइमिंग है। टाइम का मेल नहीं बैठा है। लड़के ने तय किया हो 28 साल हुए बिना (पहले) मुझे शादी करनी ही नहीं है, इस लड़की ने तय किया हो, कहती भी है कि मुझे 25 साल तक शादी नहीं करनी है। वह सारा टाइम उनके कहे अनुसार मिलता है और फिर शादी करते हैं।

नहीं है हाथ में भले ही इच्छा हो अच्छे की

तू कहती है कि मुझे शादी करनी है, लेकिन शादी करनी तेरे हाथ में नहीं है। अरे, लड़का

ऐसा मिलना चाहिए न! और जो मिलता है उसे तू नापसंद कर देती है! इसलिए अब कोई दूसरा लड़का तुझे नापसंद करेगा! इसलिए पासिंग नहीं होता। इसलिए रीजनल ऑफिस मना कर देगा। रीजनल ऑफिस होता है न! वह मना कर देता है कि इस तरह नहीं चलने देना है। ठीक हो जाएगा तेरा? पहले जो तेरी लाइफ थी और अभी की जो लाइफ है उसमें आनंद में कुछ फर्क पड़ा है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, बहुत।

दादाश्री : बहुत! तब थोड़ा जो बाकी होगा वह पूरा हो जाएगा। तेरे आनंद में फर्क पड़ा? उसे बहुत फर्क पड़ गया। तुझे कितना फर्क पड़ा?

प्रश्नकर्ता : बहुत, दादाजी। मुझे जो करना हो उसके लिए यों छूट मिले उस हेतु से, स्वतंत्रता रहे इसलिए मुझे शादी करनी थी।

दादाश्री : स्वतंत्रता रहे इसलिए?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : बल्कि शादी में तो परतंत्र होते ही हैं। बल्कि मालिक हो जाता है। 'कहाँ गई थी? कहाँ घूम रही थी?' आपत्ति उठाता है वह तो।

प्रश्नकर्ता : घूमने के लिए स्वतंत्रता नहीं चाहती थी। कुछ ऐसा काम करना हो, तो मुझे ऐसे हसबैन्ड की ज़रूरत थी कि जो भी मेरा गोल (ध्येय) हो न, मेरा पर्सनल गोल, तो उसमें मुझे फ्रीडम दे और सपोर्ट दे। लेकिन यदि पापा हों तो नहीं देते। और दूसरा क्या, कि शादी की हो तो दूसरे लोग ताने नहीं मारते, परेशान नहीं करते।

दादाश्री : हाँ, वह सही है।

कौन है परफेक्ट?

पति थोड़ा डिफेक्टिव अच्छा या अनडिफेक्टिव?

प्रश्नकर्ता : नहीं, नहीं। डिफेक्ट चाहिए ही नहीं।

दादाश्री : तो फिर तेरे वश में नहीं रहेगा, काबू में नहीं रहेगा। वह थोड़ा डिफेक्टिव हो तो आप उसे डाँट भी दोगी। अरे! ऐसा वैसा! ऐसा ढूँढ़ लो। तो आपके वश में रहेगा न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन फिर एकदम बेवकूफ नहीं चाहिए।

दादाश्री : एकदम बेवकूफ होता है क्या? यह तो ऐसा है न, तू यदि डिफेक्टिव नहीं ढूँढे तो भी डिफेक्टिव ही होता है। वह तुझे पहले से पता नहीं चलेगा और यह तो आप पहले से जान जाओगी न! इसलिए आप उसे पहले से पूछ लेना कि भाई, थोड़ी डिफेक्ट है? तब कहे, हाँ?

प्रश्नकर्ता : यदि जान ले कि डिफेक्टिव है, तो खुद का मन थोड़ा खराब हो जाता है न!

दादाश्री : बाकी डिफेक्टिव है, उसमें क्या खराब है, बल्कि अच्छा है। और बाहर लोग कहें, इनके पति आए। इसलिए यों भी रौब पड़ता है, वैसे भी रौब पड़ता है! और डिफेक्टिव होता ही है। यदि ज्ञान हो और उसमें डिफेक्ट ढूँढें तो एक-दो होंगी, उसके बजाय डिफेक्टिव न ढूँढें कि एक डिफेक्ट तो है ही!

प्रश्नकर्ता : दादा, यहाँ सभी जो लोग हैं, वे डिफेक्टिव हैं, आपसे ज्ञान ले गए वे?

दादाश्री : सभी क्या एक्ज़ेक्ट हैं? हर किसी में कोई न कोई डिफेक्ट होगी!

प्रश्नकर्ता : तो फिर इसका मतलब ऐसा नहीं हुआ कि मैं भी डिफेक्टिव हूँ?

दादाश्री : तो क्या तू सयानी है?

प्रश्नकर्ता : कोई खुद को नहीं कहना चाहता कि मैं डिफेक्टिव हूँ।

दादाश्री : नहीं, कोई भी ऐसा नहीं कहेगा, लेकिन मैं सभी को पहचानता हूँ। यह तो सारा माल ही डिफेक्टिव है, वह तो हम यों ही मन में समझते हैं, हाँ, बहुत अच्छे, बहुत अच्छे।

प्रश्नकर्ता : डिफेक्ट अपने में हो लेकिन उसके लिए शर्मिंदगी नहीं होनी चाहिए।

दादाश्री : तब क्या होना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : हमें बल्कि उसे सुधारना चाहिए। हम जानते हैं कि डिफेक्ट है, तो सुधारना नहीं चाहिए?

दादाश्री : किस बाबत को सुधारोगे? बिगड़ा हुआ सुधरता है क्या?

प्रश्नकर्ता : आपकी कृपा से सुधरता है न! तभी मोक्ष में जा सकते हैं न!

दादाश्री : सुधारकर कहाँ ले जाना है, आपको सब्जी बनानी है क्या? सब्जी ठीक करनी होती है। यह तो पाँच-पच्चीस साल रहनेवाला है, तब तक रहना है, किराये के कमरे! हम तो जैसे वह मोटल में! अभी क्या पति अच्छे होते हैं? एक लड़का ढूँढकर ला कि जो अच्छा हो, जा।

प्रश्नकर्ता : नहीं मिलता, परफेक्ट नहीं मिलता। और दादा, प्रॉब्लम क्या है? परफेक्ट नहीं मिलेगा इसलिए चाहिए ही नहीं।

दादाश्री : आपको शादी करनेवाला मिल जाए न, तो ''मैंने तुम्हारे बारे में डिफेक्टिव (तुम्हारी डिफेक्ट) की बात सुनी है, लेकिन मैं लेट गो करूँगी'' कहना। उसका हर्ज़ नहीं है लेकिन उसके अलावा और कुछ है तुम्हारे पास, और कुछ नुकसान पहुँचाए ऐसा? सिर्फ डिफेक्टिव ही है या और कुछ है?' तब कहे, 'नहीं, और कुछ नहीं हैं।' 'हाँ, दारू-वारू नहीं पीता न! मांसाहार नहीं करता न?' तब कहे, 'मैं मांसाहार करता हूँ।' तो आपको छोड़ देना पड़ेगा, कहना। इसलिए फिर स्वीकार कर लेना। पैसे में डिफेक्टिव नहीं होना चाहिए। दूसरी इन बाबतों में डिफेक्टिव हो, वह तो होता ही है इस काल में तो। अरे, वह पच्चीस साल की उम्र में शादी कर रहा है तो क्या अब तक यों ही था वह!

प्रश्नकर्ता : आपके साथ बात करते हैं न, तो आप वापस उसी बात पर ले आते हैं।

दादाश्री : तब फिर क्या करें, रास्ता तो निकालना पड़ेगा न? तुझे सयानी बनाने की हमारी इच्छा है और 'तू कैसे सुखी हो जाए' ऐसी इच्छा है। शादी करनी हो तो कर, नहीं करनी हो तो मत करना। उसका हर्ज़ नहीं है। लेकिन शादी करे तब मुझे बताना कि यह लड़का मुझे मिला है। मेरे सामने उसे सीधा कर दूँगा। मैं चाय पिलाऊँगा, उस समय मैं उसे कहूँगा, 'अरे, इस बहन को चला ले! तुझे कौन चलाएगा? लेकिन यह तो हम उसे कह देंगे, पहले से ही सावधान कर देंगे।

एक-दूसरे को हेल्प करने के लिए है जगत्

प्रश्नकर्ता : मुझे डाँटे ऐसा भी पति नहीं चाहिए और मुझे दबाए ऐसा भी नहीं चाहिए।

दादाश्री : हाँ, ऐसा चाहिए।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उससे वह दब जाए, ऐसा भी नहीं चाहिए।

दादाश्री : तो हर एक चीज़ का बाद में ठीक से आयोजन करना पड़ेगा। एक को नीचे आना पड़े तो दूसरे को ऊपर आना पड़ेगा, अगर उसे नीचा आना पड़े तो दूसरे को ऊपर आना पड़ेगा। उसका भी आयोजन करना है, यह जगत्

आयोजन है। एक्ज़ेक्ट लेवल में नहीं आता। इसमें कल्पना की थ्योरी नहीं चलती।

फ्रेन्ड की तरह काम करे ऐसा चाहिए। जैसे कि फ्रेन्ड हो इस तरह हेल्प करता ही रहे। आप उसे हेल्प करें।

प्रश्नकर्ता : ऐसा ही चाहिए। फ्रेन्ड की तरह रहे ऐसा चाहिए, लेकिन साथ ही साथ बेवकूफ नहीं होना चाहिए।

दादाश्री : लेकिन वह आपकी इच्छा अनुसार नहीं मिलेगा कुछ भी! इसलिए थोड़ी छूट रख, टेन परसेन्ट की। टेन परसेन्ट नहीं?

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसके हंड्रेड एन्ड टेन हैं तो वह टेन की छूट रखे तो हंड्रेड पर आकर खड़ा रहेगा।

दादाश्री : मोक्ष में जाने के लिए आवश्यक आधार, प्रमाण वे सब साधन हैं। वह भी मोक्ष की तरफ बढ़ता रहे, आप भी बढ़ें और इस तरह हेल्प कर-करके, हेल्पफुल हो जाएँ एक-दूसरे को!

पूरा जगत् मोक्ष की ओर ही जा रहा है लेकिन मोक्ष में जाते हुए, ऐसा सब हेल्पफुल नहीं होता। लड़ाई-झगड़ा करके बल्कि ब्रेक मारते हैं। वर्ना गर्मी का स्वभाव ही ऐसा है कि बरसात को खींचकर ले आए, जहाँ हो, वहाँ से खींचकर ले आए। गर्मी का स्वभाव बढ़ते-बढ़ते बरसात को खींचकर ले आता है। इसलिए घबराने जैसा नहीं है।

अत: इस संसार का स्वभाव ऐसा है कि मोक्ष की ओर ले जाता है हमें। मोक्ष को खींच ले आता है। संसार जितना अधिक कठोर होता जाता है, उतना ही मोक्ष जल्दी आता है। लेकिन कठोर हो जाए तब हमें बिगड़ नहीं जाना चाहिए, स्टेज पर रहना चाहिए। सही उपाय करने योग्य है, गलत उपाय करने से पीछे चला जाएगा। दु:ख आए तो ऐसा ही मानना कि मेरे आत्मा का विटामिन मिला और सुख मिले तो देह का विटामिन मिला। इस तरह से चलना। ये विटामिन रोज़ ही मिलते हैं हम सभी को। हम तो बचपन से ही ऐसा मानकर खुशी से चले हैं। तू तो एक ही तरह के विटामिन को विटामिन कहता है, वह बुद्धि का विटामिन है। ज्ञान दोनों को विटामिन कहता है। वह विटामिन अच्छा है कि खाने-पीने का खूब हो फिर भी लोग तप करते हैं। अच्छी सब्ज़ी वगैरह हो, फिर भी तप करते हैं। तप करते हैं यानी क्या, दु:ख वेदते हैं। तो आत्मा का विटामिन मिलता है। यह सब आपके सुनने में नहीं आया?

प्रश्नकर्ता : हाँ, आया है, दादा।

दादाश्री : फिर यह तो अपने आप घर बैठे मिलता है।

कबीर को मिली वैसी मिले तो शादी करना

इसलिए कबीर साहब ने कहा है न, कि ऐसी मिले तो शादी करना।

प्रश्नकर्ता : कैसी मिले तो?

दादाश्री : कबीर साहब की पत्नी थी। आपके पास टाइम हो तो बात करूँ कबीर साहब की, उनकी सारी बातें कर सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ जी। कीजिए न।

दादाश्री : तो कबीर साहब खुद दिन के उजाले में दोपहर में कपड़ा बुन रहे थे। बुनकर का काम था न, वह भी झोंपड़ी के बाहर। झोंपड़ी तो छोटी थी, उसमें कैसे कपड़े बुनने का करघा रख सकते थे? बड़ी जगह चाहिए इसलिए झोंपड़ी के बाहर धूप में एक पेड़ था। वहाँ थोड़ी देर के

लिए ठंडक हो जाती थी, लेकिन दिन भर धूप में यों ठकाठक, ठकाठक करते रहते थे।

एक उनका शिष्य था। वह बीस साल का हुआ तब पूछने आया, वह कहता है, साहब, मेरे विवाह के लिए लोग पूछने आए हैं, तो मुझे शादी करनी चाहिए या नहीं उसके बारे में मुझे कुछ बताओ। तो साहब ने उसकी बात नहीं सुनी। साहब तो उसकी बातें सुनकर करघा ठकाठक, ठकाठक करते रहे और दूसरी ही बातें करते रहे। वह पूछ रहा है उसकी बातें अनसुनी करके फिर दूसरी ही बातें करते रहे। यों करते-करते वह शिष्य चौबीस साल का हो गया तब तक तो कबीर साहब ने जवाब नहीं दिया। तो जब चौबीस साल का हो गया तब लोग क्या कहते हैं, अब तू बड़ा हो गया है तो बाद में अकेला रह जाएगा इसलिए शादी कर ले झटपट। उससे वह परेशान हो गया कि अब यदि शादी नहीं करूँगा तो भटकता रह जाऊँगा।

इसलिए वहाँ साहब को क्या कहता है, कि साहब मुझे या तो ना कह दो या तो हाँ कह दो, दोनों में से एक कह दो। अब साहब, मुझसे ज़्यादा समय तक सहन नहीं होगा इसलिए साहब समझ गए कि यह लड़का चिढ़ गया है।

कबीर साहब अपनी झोंपड़ी के बाहर बैठे थे। झोंपड़ी के बाहर करघा रखा हुआ था। करघे के लिए ऐसा गड्ढा करना पड़ता है। उस गड्ढे में पैर रखा जाता है और फिर पैरों से इस तरह ठकाठक, ठकाठक, ठकाठक, ठकाठक करते रहते हैं। ऊपर शेड-वेड कुछ भी नहीं, झोंपड़ी भी नहीं। झोंपड़ी तो यहाँ पीछे थी। कबीर साहब वहाँ करघे पर कपड़ा बुन रहे थे। वहाँ पर वह शिष्य आकर बैठा। कहता है, 'आज तो साफ-साफ कह दो। मुझसे पूछने आनेवाले तो चले जाते हैं। अब आखिर बार पूछने आया हूँ। सभी घरवालों ने कहा है कि अब आखिरी बार पूछना। अब पूछने नहीं आऊँगा। इसलिए आप कुछ भी कहो, यदि मना करो तो शादी नहीं करूँगा और आप कहो हाँ तो शादी करूँगा, वर्ना शादी नहीं करूँगा'। पर कबीर साहब तो, वह बोलता रहता है लेकिन कुछ नहीं बोलते। फिर वह शिष्य फिर से पूछता है। थोड़ी देर राह देखने के बाद कहता है, 'साहब, मेरे लिए कुछ बोलो न, आप यह बुनाई ही करते जा रहे हैं, लेकिन मेरे लिए कुछ नहीं बोलते।' तब भी कबीर साहब ने सुना और थोड़ी देर के बाद ठकाठक, ठकाठक करने लगे। उनका वह शिष्य चिढ़ा नहीं, लेकिन शिष्य ने सोचा कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं? अत: तीसरी बार पूछने पर भी, वे कुछ नहीं बोले। फिर इतना कहा, 'अरे बीबी साहब, तब अंदर से बीबी बोली, 'हाँ, साहब!' 'अरे दीया लाइए तो।' अब सुबह के साढ़े दस बजे थे, फर्स्ट क्लास उजाला था! बीबी साहब से कहते हैं, 'दीया लाओ। तो वे बीबी साहब दीया जलाने के लिए अंदर गए, मिट्टी का दीपक ही था। वे एक नहीं दो मिट्टी के दीपक लेकर आए।

उसके बाद जहाँ पर कबीर साहब काम कर रहे थे, वहाँ पीछे बीबी साहब आकर खड़े हो गए, दोनों दीपक इस तरह पकड़कर खड़े रहे। अब साढ़े दस बजे का उजाला और उसमें दो दीपक जलते रहे। वह शिष्य तो आश्चर्य चकित हो गया कि यह क्या है भला? मेरे लिए कुछ नहीं बोलते और अपना ही करते रहते हैं! अब बीबी भी नहीं बोल रही थी कि मैं यह दीपक लेकर आई और आप बोलते क्यों नहीं? जैसे कि दीवट (चिरागदान) हो न वैसे खड़े रहे। दीवट आपने देखी है? हाँ। उस पर दीया रखा होता है लेकिन वह दीये को न हिलाती है, न गिराती है, कुछ भी नहीं करती। वैसे दीवट की तरह पीछे

खड़े रहे। बोलते भी नहीं कि आपने यह दीया मँगाया था वह आ गया, बहरे हैं क्या? ऐसा कुछ भी नहीं बोलते।

फिर कबीर साहब पीछे देखकर कहते हैं, 'ओहोहो! आप आए हो?' तब बीवी कहती है, 'अभी आई हूँ।' तब कहते हैं, 'अब ज़रूरत नहीं है। ले जाओ।' तो वे वापस चले गए। उसके बाद उन्होंने फिर से ठकाठक, ठकाठक करना शुरू कर दिया।

उस शिष्य को कुछ समझ में नहीं आया। वह तो सोच रहा था कि ये अपनी बीबी की ही बात कर रहे हैं, मेरी बात नहीं करते। इसलिए फिर वह शिष्य कहता है, 'साहब, मेरे लिए कुछ कहो न, आपको जो अच्छा लगे, वह! उसमें हर्ज़ नहीं! ना कहो तो मैं ना तय कर लूँगा!' तब कबीर साहब कहते हैं, 'मैंने कहा न तुझे!' तब शिष्य कहता है, 'आपने कुछ नहीं कहा, मैं पक्का कह रहा हूँ।' तब कबीर साहब कहते हैं 'ये जो हमारी बीबी हैं न, ऐसी मिले तो शादी करना, वर्ना नहीं करना।' उसे क्या समझ में आए, इसमें यह बीवी कैसी है? वह तो ऐसा समझा कि 'यह मोटी है', इसलिए ऐसा कह रहे हैं कि 'यह मोटी है तू ऐसी लड़की से शादी करना! पतली से मत करना।' तब फिर कबीर साहब ने जोर से कहा कि 'मोटी-पतली मत देखना, काली-गोरी मत देखना, ऐसी हो तो शादी करना।' ऐसी यानी देखो, मैंने दिन के उजाले में कहा, 'दीया लाओ', तो दूसरी कोई औरत होती न तो कहती, 'आपकी आँखें फूटी हुई हैं क्या जो यहाँ दीया मँगवा रहे हो। अरे, अंधे हो क्या? बाहर इतना उजाला है फिर क्यों दीया मँगवा रहे हो? शर्म नहीं आती?' इस तरह भीतर से गालियाँ ही देती रहती। लेकिन यह तो देखो, एक अक्षर भी नहीं कहा और एक दीया मँगाया तो दो दीये लेकर आए और पीछे आकर इस तरह विनयपूर्वक खड़े रहे। पीछे से एक अक्षर भी दुःख नहीं दिया। ऐसी मिले तो शादी करना।'' तब कहता है, 'साहब, ऐसी तो मिलेगी ही नहीं।' तब कबीर साहब कहते हैं। 'अरे, शादी किए बिना रहो न! कुंवारे पड़े रहो न चुपचाप! अब और क्या इज्जत खराब करनी है, उसके बजाय पड़े रहो न!' क्या कबीर साहब ने, कुछ गलत कहा इसमें? और कोई पुण्यशाली हो तो मिल भी सकती है!

कुछ लोग तो मुझसे आकर कहते हैं, कि 'दादा, मेरे घर में पत्नी तो नागिन जैसी है! वह काटती भी है!' अब ऐसा फँसाव हो तो क्या होगा? कहाँ जाएगा? कबीर साहब की बीबी तो कैसी? एक अक्षर भी नहीं कहा, वर्ना दूसरी कोई होती तो चिल्लाती कि, 'अरे, अंधे हो क्या? अभी दोपहर में दीया मँगवा रहे हो, क्या दिखाई नहीं देता?' शादी के बाद छोड़ना हो तो बहुत मुश्किल होता है न? और टेढ़ी मिलने के बाद तो जैसे इस बर्तन में हींग की गंध लग जाती है न तो वह हींग की गंध छः महीने तक उस बर्तन में ही लगी रहती है! ऐसी एक ही जन्म टेढ़ी पत्नी मिल गई तो क्या होगा? कितने ही जन्म बिगाड़ देगी! छोड़कर भाग भी नहीं सकते। हमारे वड़ोदरा में एक भाई थे, वे पत्नी से (तंग आकर) उकताकर भाग गए थे। दिल्ली में महाराज से दीक्षा ले ली थी। उनकी पत्नी तो ऐसी थी कि आखिर में दिल्ली से उनको वापस लेकर आयी!

ऐसा सुनकर तो खुद तय कर सकता है न। अनुभव अर्थात् क्या? किसी की बात तो सुननी चाहिए न? शादी कर ली इसलिए शादी की बात नहीं सुननी ऐसा कहाँ लॉ (नियम) है? देखो कबीर साहब ने अच्छा कहा न? कैसी मिली थी, कबीर साहब को!

पति को परमेश्वर मानकर, उनकी आज्ञा पालन करती है, उस स्त्री का मोक्ष होता है या नहीं होता? तब कहते हैं, पंद्रह जन्म में तो ज़रूर होता है।

प्रश्नकर्ता : पति भी परमेश्वर जैसा होना चाहिए न?

दादाश्री : हाँ, पति अगर मार मारता हो तो उसे कैसे परमेश्वर मानें? परमेश्वर मार मारते होंगे क्या? कबीर मारते थे क्या बीबी को? मारे तो ऐसी दशा होगी क्या? ये तो थप्पड़ मार देते हैं। पहले राम होना पड़ता है, तो वह सीता हो सकती है। ये लोग तो यों ही, 'तू सीता हो जा, सीता हो जा', कहते हैं। आपका भी यदि ऐसा तालमेल बैठ जाए तो, 'इसके जैसी मिले तो शादी कर लेना, वर्ना नहीं। और किसी से शादी करनी ही नहीं।' ऐसा तय करके रख लेना है!

ये तो रास्ते पर चढ़ गए थे, उस रोड पर चढ़कर बाद में वापस आने पर तो बहुत थकान लगती है न, भला! और वह तो रोड पर चढ़ा ही नहीं वहाँ पर। यह तो, उस रोड पर चढ़े हुए हों, और वह भी, इसके जैसी मिले तो शादी करना, वर्ना शादी करने जैसा नहीं है।

मुझे भी हीरा बा मिले हैं, छहत्तर साल के हैं, मुझे भी वे ऐसे मिले हैं। मुझे कभी भी परेशान नहीं किया, हमारा तो चालीस साल से मतभेद ही नहीं हुआ। मतभेद हो तब झंझट होगी न!

कबीर साहब को कैसी मिली और लोगों को कैसी मिली? देखो अलग-अलग तरह की मिलती हैं न! कबीर साहब ने दिन के उजाले में दीये मँगाए, तो दीये लेकर बाहर आए। एक मँगाया तो दो लेकर आए। ऐसी मिल रही हो तो शादी करने में हर्ज़ नहीं किसी को।

प्रश्नकर्ता : दिन में तो क्या, पर रात में दीया मँगवाएँ, तो भी कहे कि दिखता नहीं क्या? धुंधलेपन के चश्मे आ गए हैं, ऐसा कहेगी।

दादाश्री : इसलिए कबीर साहब ने कहा था, ऐसी मिले तो शादी करना, वर्ना नहीं करना। शादी करने जैसा नहीं है जगत्!

प्रश्नकर्ता : अब यह कोई गुड़ है कि चखकर ले लें? यह क्या ऐसा है जिसे चखकर ले सकते हैं?

दादाश्री : नहीं। ये तो सभी के हिसाब चुकता होते हैं। जिसे जैसा चाहिए न, वह हिसाब है यह! इस हिसाब में फिर से दखल नहीं होगा वहीं से साफ हो जाता है। समभाव से *निकाल* कर दें, तो हो जाता है साफ।

पहले अच्छे को 'ना' कहा, फिर भुगतो फल

पहले कुछ अच्छा आया हो और उसे निकाल दिया ऐसा नहीं हुआ है?

प्रश्नकर्ता : ऐसा हुआ है।

दादाश्री : उसका यह फल है। तुझे समझ में आया न?

प्रश्नकर्ता : मैंने बहुतों को मना किया है, इसलिए अब मुझे पछतावा होता है।

दादाश्री : एक-दो केस में ऐसे उनका तिरस्कार किया न, उसका यह सब फल आया है। अब वह फल भुगते बिना कोई चारा ही नहीं है न! उन दिनों क्यों ऐसा करती थी कि मन में ऐसी खुमारी रहती थी? नहीं, ऐसा नहीं, बता न, उसमें क्या हर्ज़ है?

प्रश्नकर्ता : मन में ऐसा था कि शादी करनी ही नहीं है।

दादाश्री : किस कारण से नहीं करनी थी?

प्रश्नकर्ता : कोई भी कारण नहीं था।

दादाश्री : तुझे ऐसा लगता था, ये सभी लड़के तरबूज़े जैसे हैं। नहीं, एक लड़की को ऐसा लगता था। वह लड़की मुझसे मिली न तो कहती है। इसमें कुछ अच्छाई नहीं दिखती।

शादी से पहले, पूछ लेना दादा को

आपको मुश्किलें आएँ तो मेरे पास आ जाना और बता जाना कि ये मुश्किलें आई हैं।

प्रश्नकर्ता : मैं आपको आकर मेरा दु:ख बताऊँ तो आपको चिंता होगी न कि मेरी बेटी को ऐसा दु:ख है!

दादाश्री : मुझे चिंता होती होगी? हमें चिंता-विंता नहीं होती। हाँ, उसे सीधा कर देते हैं।

प्रश्नकर्ता : फिर आप मेरे पिताजी से कहोगे तो फिर पिताजी को चिंता होगी।

दादाश्री : नहीं, मैं तेरे पिताजी को बताऊँगा ही नहीं न! मैं तो इसे प्राइवेट रखूँगा।

प्रश्नकर्ता : तो मैं आपको सारी बात बताऊँगी।

दादाश्री : तू मुझे प्राइवेटली (अकेले में) बताना। मुझे जो कोई भी व्यक्ति प्राइवेटली बताता है, वह मैं किसी से भी नहीं कहता। कोई कुछ भी नहीं जानता, वर्ना वह व्यक्ति तो आत्महत्या करेगा। खुद की आबरू चली गई उस वजह से इसलिए ऐसा कह नहीं सकते किसी को भी। हमने सारी पूरी दुनिया की गोपनीयता भर रखी है, भीतर सबकुछ ही जमा है! उस तरफ देखूँ तो पता चल जाता है कि वह आया था।

अत: हम तेरे पिताजी को, किसी को भी नहीं बताएँगे। माताजी से भी नहीं कहेंगे और पिताजी से भी नहीं कहेंगे। उल्टा हम कहेंगे कि इसका पति, वह लड़का बहुत अच्छा है।

घडभांज-भांजघड (बनाना-तोड़ना, तोड़ना-बनाना), वह हमारा काम ही नहीं है। तुझे ऐसा लगा कि ये 'दादा' *भांजघडीया* (तोड़ने और बनानेवाले) हैं ऐसा?

शादी करने के बाद प्रोजेक्ट क्या?

प्रश्नकर्ता : संसार व्यवहार में पूर्व के जो कर्मोदय हुए हैं, उनके अनुसार सब चलता हो, उसमें कहीं प्रपंच मालूम पड़े कि हमारे साथ प्रपंच हो रहा है, तब उस स्थिति का सामना कैसे करें? 'समभाव से *निकाल* (निपटारा)' करने के लिए क्या करें?

दादाश्री : पति टेढ़ा मिला हो तो उसे किस प्रकार जीतोगी? क्योंकि, जो प्रारब्ध में लिखा है, वह छोड़ेगा नहीं न! और आपकी इच्छा के अनुसार नहीं चले ऐसा है यह संसार! तब मुझे बता देना कि 'दादाजी, ऐसा पति मिला है।' तब मैं तेरा सब तुरंत ही रिपेयर कर दूँगा और तुझे चाबी भी दे दूँगा।

औरंगाबाद में एक मुस्लिम लड़की आई थी। मैंने पूछा, 'क्या नाम है तुम्हारा?' तब कहती हैं, 'दादाजी, मेरा नाम मशरूर है।' मैंने कहा, 'आ, यहाँ बैठ मेरे पास, क्यों आई हैं तू?' तब कहती है, 'मेरा भाई दादाजी की बहुत ही तारीफ करता है! दादाजी, दादाजी, दादाजी, दादाजी! तब मैंने सोचा कि वे दादाजी कैसे होंगे?' तो मैंने कहा, 'ये हैं ऐसे, देखो ये दादाजी हैं!' वह सोच रही थी कि दादाजी कैसे बाल सँवारते होंगे।' कैसी दाढी रखते होंगे? उसका भाई क्यों तारीफ करता था? उसके भाई को ज्ञान दिया था। उसके बाद ज्ञान लेकर यहाँ से सीधा इराक चला गया था।

इराक में उसे दस हज़ार रुपये का वेतन मिलता होगा। जब उसकी बहन की शादी होनेवाली थी तब वापस आया था। अब यहाँ से ज्ञान लेकर गया, उसके बाद मुझे मिला ही नहीं। लेकिन वापस आया तब घर आकर दादाजी की तारीफ करने लगा, कि 'दादाजी हैं और मुझे दादाजी के दर्शन करने हैं।'

प्रश्नकर्ता : वह कह रहा था, इराक में युद्ध चल रहा था। उस समय आसपास सभी ओर से बॉम्बार्डिंग हो रही थी, उस समय हर तरफ आग लगी हुई थी, लेकिन मुझ पर कुछ असर नहीं हुआ। दादाजी का यह ज्ञान हाज़िर रहा कि 'व्यावस्थित है, मैं शुद्धात्मा हूँ'।

दादाश्री : हाँ, वहाँ दादाजी हाज़िर रहते थे। तो फिर उसकी बहन गुस्सा हो गई कि ऐसे कैसे दादाजी वहाँ रक्षण करते थे? इसलिए उसकी बहन दर्शन करने आई कि आपके गुरु कैसे हैं, मैं उन्हें देखना चाहती हूँ। वे 'ज्ञानी पुरुष' कैसे हैं! वह आई। फिर आने के बाद उसके मन में अच्छा लगा, जैसे ही उसने देखा उसे अच्छा लगा, दिल में उसे महसूस हुआ कि खुदा के असिस्टन्ट (सहायकर्ता) जैसे तो लगते ही हैं ये! उसे ऐसा महसूस हुआ इसलिए फिर बैठ गई। फिर और भी कई बातें निकलीं।

फिर मैंने पूछा, 'क्या करती है तू?' उसने कहा, 'मैं लेक्चरर (व्याख्याता) हूँ।' तब मैंने पूछा, 'शादी-वादी की या नहीं की?' तो कहती है, 'नहीं, शादी नहीं की, लेकिन मँगनी हुई है।' मैंने कहा, 'कहाँ हुई है, मुंबई में?' तो कहती है, 'नहीं, पाकिस्तान में।' लेकिन अब शादी 'कब करनेवाली हो?' तब कहती है, 'छः महीने में ही।' मैंने कहा, 'किसके साथ? पति कैसा ढूँढा है?' तो कहती है, 'लॉयर (वक़ील) है।'

बाद में मैंने पूछा कि, 'वह पति बनकर तुझे कुछ दुःख नहीं देगा? अभी तुझे किसी प्रकार का दुःख नहीं है और पति के आने के बाद पति दुःख देगा तो?' फिर मैंने कहा, 'उसके साथ शादी करने के बाद तेरा क्या प्रोजेक्ट (योजना) है? उसके साथ शादी होने से पहले तूने प्रोजेक्ट तो किया होगा न, कि उसके साथ इस तरह बर्ताव करना है? या फिर नहीं किया है? वहाँ शादी के बाद क्या करना है उसके लिए कुछ तैयारियाँ तूने की हैं? शादी के बाद उस लॉयर (वकील) के साथ तेरी जमेगी या नहीं उसकी?'

तब वह कहती है, 'मैंने सारी तैयारियाँ कर रखी हैं। वह ज़रा ऐसा बोलेगा तो मैं उसे ऐसा जवाब दूँगी। वह ऐसा कहेगा तो मैं ऐसा कहूँगी, वह ऐसा कहेगा तो, एक-एक बात के जवाब मेरे पास तैयार हैं।'

जितनी रूस ने तैयारियाँ कर रखी हैं न, उतनी ही तैयारियाँ तूने कर रखी है। दोनों ओर से पूरी तैयारियाँ! वह तो मतभेद खड़ा करने की ही तैयारियाँ कर रखी थी। वह झगड़ा करे, उससे पहले ही फोड़ दे! जैसे अमेरिका के सामने रूस ने सारी तैयारियाँ कर रखी हैं न, वैसी तैयारी इसने कर रखी थी कि वह ऐसे सुलगाए तो हमें ऐसे सुलगाना है। अतः वहाँ जाने से पहले ही हुल्लड़ न! वह इस तरफ तीर छोड़े, तब हमें उस ओर छोड़ना है। वह ऐसा छोड़े, तब हमें ऐसा छोड़ना है। मैंने कहा, यह तो तूने कोल्ड वॉर (शीतयुद्ध) शुरू कर दिया। वह कब शांत होगा? कोल्ड वॉर बंद होता है क्या? यह देखो न, बड़े साम्राज्यवालों का बंद नहीं हो रहा है, रूस-अमेरिका का!

ये लड़कियाँ ऐसा सब करती हैं, वे सारा प्रबंध कर देती हैं इस तरह। ये लड़के तो बेचारे

भोले! लड़के ऐसा सब प्रबंध नहीं करते और उस घड़ी उस अवस्था में मार खा जाते हैं, भोले हैं न!

यह आप जो कहते हैं न, प्रपंच के सामने क्या तैयारी करनी चाहिए? लेकिन उस लड़की ने सारी तैयारियाँ कर रखी थीं, बॉम्बार्डिंग सबकुछ ही! वह ऐसा बोले तो अटैक, वैसा बोले तो अटैक (आक्रमण)। 'सारी तैयारियाँ कर रखी थीं!' फिर मैंने उसे कहा, 'यह सब तुझे किस ने सिखाया है? निकाल देगा और डाइवोर्स ले लेगा और तलाक दे देगा!' तलाक दे देगा या नहीं देगा? मैंने कह दिया कि 'इस तरह तो छः महीने में तलाक हो जाएगा। तुझे तलाक लेने हैं? यह तरीका गलत है।' फिर मैंने उसे कहा, 'तुझे तलाक नहीं दे, इसलिए मैं तुझे यह सब सिखा रहा हूँ।'

तब कहती है, 'दादाजी, ऐसा नहीं करूँ तो क्या करूँ? वर्ना तो वह मुझे दबा देगा।' मैंने कहा, 'वह क्या दबानेवाला था? लॉयर लट्टू, वह तुझे क्या दबानेवाला था?' बाद में मैंने पूछा, 'बहन, मेरा कहा मानोगी? तुझे सुखी होना है या दुःखी होना है? बाकी जो स्त्रियाँ सब तैयारियाँ करके पति के पास गई थीं, वे अंत में दुःखी हुई हैं। तू मेरे कहने के मुताबिक जाना, किसी भी तरह की तैयारी किए बगैर जाना।' फिर उसे समझाया।

सौदे करने हैं प्रेम के

घर में रोज़ क्लेश होगा तो वकील कहेगा, 'जाने दो, इससे तो अच्छा दूसरी लाऊँ।' उसमें फिर यह टिट फोर टैट (जैसे को तैसा) है? प्रेम के सौदे करने हैं, वहाँ ऐसा? सौदे किसके करने हैं?

प्रश्नकर्ता : प्रेम के।

दादाश्री : प्रेम के। भले आसक्ति से हो लेकिन कुछ प्रेम जैसा है न! उस पर द्वेष तो नहीं होता न! मैंने कहा, 'ऐसा नहीं करते। तू तो पढ़ी-लिखी है, क्या इसलिए ऐसी तैयारियाँ कर रखी हैं? यह तो वॉर (लड़ाई) है? यह क्या हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की वॉर है? और संसार में सभी यही कर रहे हैं। ये लड़के, लड़कियाँ-वड़कियाँ सभी यही कर रहे हैं। फिर दोनों का जीवन बिगड़ जाता है।' फिर उसे सब समझाया।

पति के साथ इस प्रकार वर्तन करना चाहिए। इस प्रकार यानी वह टेढ़ा चले तो तू सीधी चलना। उसका समाधान करना चाहिए, हल निकालना चाहिए। उसकी झगड़ने की तैयारी में आपको एकता रखनी चाहिए। वह अलग करे फिर भी आपको एकता रखनी चाहिए। वह अलग होने की बातें करे, फिर भी तू कहना कि 'हम एक हैं।' क्योंकि ये सब रिलेटिव संबंध हैं, वे रिश्ता तोड़ दें और आप भी तोड़ दोगी तो टूट जाएगा कल सवेरे। अर्थात् तलाक दे देगा। तब पूछती है, 'मुझे क्या करना है?' मैंने उसे समझाया, उनका मूड देखकर चलना। उनका मूड देखना और जब मूड में नहीं हो तब तू अपने मन में 'अल्लाह' का नाम लेती रहना और मूड ठीक हो, तब उनके साथ बातचीत शुरू करना। वे मूड में न हो और तू छेड़ेगी तो आग लग जाएगी!'

तुझे उन्हें निर्दोष देखना है। वे तुझे उल्टा कहें फिर भी तू शांत रहना। सच्चा प्रेम होना चाहिए। आसक्ति में तो छः-बारह महीने में बाद में फिर टूट ही जाएगा। प्रेम में सहनशीलता होनी चाहिए, एडजस्टेबल (समाधानी) होना चाहिए।

अतः मशरूर को मैंने तो पढ़ा दिया, ऐसा पढ़ाया। मैंने कहा, 'कुछ भी मत करना, वह इस ओर तीर चलाए तब आप स्थिर होकर 'दादा, दादा' करती रहना। फिर उस ओर तीर चलाए

तब स्थिर होकर 'दादा, दादा' करना। तू एक भी तीर मत चलाना', फिर मैंने विधि कर दी।

बाद में पूछा, कि 'तेरे ससुराल में कौन-कौन हैं?' तब कहती है, 'मेरी सास है।' 'सास के साथ तू कैसे एडजस्टमेन्ट करेगी?' तब कहने लगी, 'उसका भी मैं सामना कर लूँगी, सास का।'

लेकिन फिर मैंने उसे समझाया न, बाद में कहती है, 'हाँ, दादाजी, मुझे ये सब बातें पसंद आईं।' 'तो तू इस प्रकार करना तो तलाक नहीं देगा और सास के साथ मेल रहेगा।' फिर उसने मुझे एक चंदन की माला पहनाई। मैंने कहा, 'यह माला तू ले जाना और तेरे साथ रखना। माला के दर्शन करने के बाद पति के साथ अपना व्यावहार चलाना, तो बहुत सुंदर चलेगा। उसने वह माला आज भी अपने पास रखी हुई है।'

प्रपंच से टूटे चरित्रबल

उससे चरित्रबल की बात की थी कि पति कुछ भी बोले, तुझे कुछ भी करे, तब भी उस समय तू मौन धारण करके, शांत भाव से देखती रहेगी, तो तुझ में चरित्रबल उत्पन्न होगा और उसका उस पर प्रभाव पड़ेगा, लॉयर (वक़ील) हो तो भी। वह कैसे भी डाँटे, तब तू दादा का नाम लेना और स्थिर रहना! उसके मन में ऐसा लगेगा कि यह कैसी है! यह तो हारती ही नहीं है। बाद में वह हार जाएगा। उसने ऐसा ही किया, लड़की ऐसी थी। दादा जैसे सिखानेवाले मिल जाएँ तो फिर क्या बाकी रहेगा! वर्ना पहले एडजस्टमेन्ट ऐसा था, रूस और अमेरिका जैसा। तुरंत वहाँ बटन दबाते ही सुलगे सब, सटासट। क्या यह मानवता है? किसलिए डरते हो? जीवन किसलिए होता है? जब संयोग ही ऐसे हैं, तब वह क्या करे फिर? संयोग ऐसे हैं फिर!

ये जो जीतने की तैयारी करते हैं न, उससे चरित्रबल 'लूज़' (कमज़ोर) हो जाता है। हम किसी प्रकार की तैयारी नहीं करते। बाकी चरित्र का उपयोग करना, जिसे आप तैयारी कहते हो, लेकिन उससे आपमें जो चरित्रबल है वह लूज़ हो जाता है और अगर चरित्रबल खत्म हो जाएगा, तो तेरे पति के सामने तेरी क़ीमत ही नहीं रहेगी। तब उस लड़की की समझ में अच्छी तरह बैठ गया। बाद में मुझसे कहती है कि 'दादाजी, अब मैं कभी हारूँगी नहीं, ऐसी गारन्टी देती हूँ।'

आपके साथ कोई प्रपंच कर रहा हो और उसके सामने तैयारी करें न, तो आपका चरित्रबल टूट जाएगा। वह कितने भी प्रपंच करता हो तो अपने प्रपंच में खुद ही फँस जाएगा। लेकिन अगर आप तैयारी करने जाओगे, तो आप ही उसके प्रपंच में फँस जाओगे। हमारे सामने तो बहुत लोगों ने प्रपंच किए थे लेकिन वे प्रपंच करनेवाले फँस गए थे। क्योंकि हमें घड़ी भर भी कोई विचार नहीं आता। वर्ना तैयारी करने के विचार आएँ न, तो भी अपना चरित्रबल टूट जाता है, शीलवानपन टूट जाता है।

शील कब उत्पन्न होता है?

शीलवान यानी क्या? कि वह गालियाँ देने के लिए आया हो, तो यहाँ आकर चुप बैठ जाता है। हम कहें कि कुछ बोलो, बोलो न! लेकिन उससे एक अक्षर भी नहीं बोला जाता। वह शील का प्रभाव है! अगर हम तैयारी करें न, तो शील टूट जाता है। इसलिए तैयारी मत करना। जिसे जो करना हो करे। 'सभी में मैं ही हूँ' कहना।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वे हमें खींचने की कोशिश कर रहे हों तो?

दादाश्री : वे चाहे कितनी भी खींचने की कोशिश करें लेकिन आप खींचे जाना नहीं चाहते, तो वे चाहे कुछ भी करें, उनका कुछ नहीं चलेगा!

प्रश्नकर्ता : लेकिन हमें नहीं खींचे जाना है, ऐसा संकल्पित तो रहना ही पड़ेगा न?

दादाश्री : नहीं, आपको नहीं खींचे जाना है उसके लिए आपको खुद के स्वाधीन ही रहना है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या अपनी सहज स्थिति में ही रहना है?

दादाश्री : हाँ, सहज स्थिति में ही और संयोगवश जाना पड़े, इस तरह खींचे जाना पड़े, तो फिर उस बाबत में आपको अनावश्यक व्यवहार में नहीं पड़ना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : तन्मयाकार नहीं होना चाहिए?

दादाश्री : उसमें बिल्कुल भी तन्मयाकार नहीं होना है। पहले शीलवानपन उत्पन्न होने दो। यह 'ज्ञान' देने के बाद व्यक्ति दिन-प्रतिदिन शीलवान होता जाता है। जिसे ये बाहर प्रभावशाली कहते हैं, वह तो बहुत छोटी चीज़ है। वह तो इन बाहर के लोगों में भी होती है। लेकिन शीलवानपन से तो भगवान के सामने भी खुद को इन्फिरियारिटी कॉम्प्लेक्स (लघुता ग्रंथि) नहीं होता और जिसे भगवान के सामने इन्फिरियारिटी कॉम्प्लेक्स नहीं होता, तो फिर इन मनुष्यों के सामने तो होना ही नहीं न? शीलवान! शील तो सब प्रकार से रक्षा करता है। देवताओं से रक्षा करता है, इन साँप, कीड़ें और सभी जानवरों से रक्षा करता है, सभी से रक्षा करता है, इसलिए शील की ही ज़रूरत है।

और शील कब उत्पन्न होता है? 'ज्ञानी पुरुष' के ज्ञान प्रदान करने के बाद, फिर खुद के खाली समय का उपयोग शील में करें। शील अर्थात् सामनेवाला जो है वह लड़ाई की तैयारी कर रहा हो उसके सामने आप लड़ाई की तैयारी नहीं करे। जो तैयारियाँ करता रहता है उसका सब लीकेज होता है। शील का पूर्ण लीकेज! उसके बाद शील समाप्त हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन हमें इस शील को बचाए रखने के लिए क्या बाड़ बनानी चाहिए, ताकि भेड़-बकरियाँ चर न जाएँ?

दादाश्री : नहीं। यह शील तो ऐसी चीज़ है न कि, उसे भेड़-बकरियाँ तो चरें ही नहीं, बल्कि कोई भी उसे छू न पाए, उसे शील कहते हैं। इसलिए आपको शील की रक्षा नहीं करनी पड़ती। कोई कहेगा कि रात में कोई चर जाए तो? तो फिर जागना पड़ेगा? अरे, नहीं जागना है, चैन से सो जाओ। आप आराम से सो जाओ।

ऐसा है कि किन्हीं संयोगों में लड़का आपका विरोधी हो जाए, वाइफ कुछ संयोगों में विरोधी हो जाए, उस समय आप प्रतिकार करो तो आपका शील समाप्त हो जाता है। उसके बजाय आप देखते रहें कि यह मशीन कुछ बिगड़ी हुई लग रही है! वह मशीन किस तरफ से बिगड़ी है वह देखते रहें। वर्ना ये लोग तो क्या करते हैं कि, 'तू ऐसी है, तू वैसी है' कहते हैं इसलिए हो जाता है, शील उनका समाप्त हो जाता है! हमें तो कोई लाख गालियाँ दे तो भी हम कहते हैं 'आओ भाई'। तब कोई कहेगा कि लड़का विरोध करता है तो अभी से डराएँगे नहीं, तो बाद में वह ज्यादा विरोधी हो जाएगा। नहीं, उसे डराने से तो आपका शीलवानपन टूटता जाएगा और आपकी निर्बलताएँ बढ़ती जाएगी और लड़का हावी हो जाएगा। इसलिए यदि आप उसे डराते नहीं हैं और आप उसकी बात सहन करते हैं सुनते हैं तो वह धीरे-धीरे टर्न आउट (परिवर्तित) हो जाएगा। इस शील के प्रभाव के कारण! वर्ना यह नहीं जानने से तो लोग बेचारे मार खाते हैं!

प्रपंच के सामने तैयारी करने में आपको नये प्रपंच खड़े करने पड़ते हैं और फिर आप स्लिप (फिसल) हो जाते हैं! अब आपके पास वह

हथियार ही नहीं है न! आपके पास वह हथियार ही नहीं है न! उसके पास तो वह हथियार है, तो वह भले ही चलाए! फिर भी वह 'व्यवस्थित' है न! लेकिन वैसे भी उसका हथियार उसे ही लगता है, ऐसा 'व्यवस्थित' है!

उसे सब अच्छी तरह समझ में आ गया। दादाजी ने ड्रॉईंग कर दिया। मुझसे कहती है, 'ऐसा ड्रॉईंग कहना चाहते हैं?' मैंने कहा, 'हाँ, ऐसा ड्रॉईंग।'

मानना पड़ेगा! फिर उस लड़की ने अपने माता-पिता से बात की। तो उसके पिता जो डॉक्टर थे, वे दर्शन करने आए।

देखो, यों तो दादाजी को क्या कुछ देर लगती है? मशरूर आनी चाहिए यहाँ! आ गई तो ऑपरेशन हो गया झट-पट! अभी भी वहाँ पर हमेशा 'दादाजी, दादाजी' हर रोज़ याद करती है न!

मोक्ष में पहुँचा दे एडजस्ट एवरीव्हेर

वह (मशरूर) अभी भी दर्शन करके, अच्छी तरह संसार चलाती है। उसने कहा कि दादा ने मेरा पूरा संसार सुधार दिया! वह अब लड़ाई-झगड़े में नहीं पड़ती। वर्ना लॉयर को कितनी देर लगेगी? साल भर हुआ और थोड़ी बूढ़ी जैसी दिखी कि तलाक! उन्हें तलाक देने में कितनी देर लगेगी? आपको तलाक देना हो तो दे सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं दे सकते?

दादाश्री : नहीं दे सकते, नहीं? और वे तो तलाक दे देते हैं। आपको तो इस मोक्षमार्ग में मदद करते हैं न या परेशान करते हैं? आप उन्हें मोक्षमार्ग में मदद करते हो या परेशान करते हो?

प्रश्नकर्ता : मदद करते हैं, दादा।

दादाश्री : छेड़ते हो क्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं, अब छेड़ना बंद कर दिया है।

दादाश्री : तब ठीक है। मोक्ष में जाने के लिए मदद करने की ज़रूरत है, दो व्यक्ति हों तो! और दो न हों तो अकेला हो तो अकेला, लेकिन फिर दो हों तो उत्तम हैं न! जोड़ी हो तब तो अच्छा है न? दो पहिए के बगैर गाड़ी कैसी निभेगी फिर? भले ही पहिया किच-किच करता हो, दो हैं न? इसीलिए मशरूर का जीवन सुधर गया।

कोई सीधा नहीं होता तो मैं तो कह देता हूँ कि तेरा आत्मा स्वीकार करता है, लेकिन तुम्हें सीधा नहीं होना है, तो हम आराम से हार गए हैं, तू जीत गया है। घर पर रेशमी चादर लाकर सो जा आराम से। क्योंकि उसे हराकर भेजेंगे तो नींद नहीं आएगी उसे पूरी रात! उसका हमें दोष लगेगा। हमारे निमित्त से नींद नहीं आए तो हमें दोष लगेगा न? इससे अच्छा हम हार जाएँ, वह क्या गलत है?

प्रश्नकर्ता : दादा, यह 'एडजस्ट एवरीव्हेर' यह जो आपने कहा, इसकी वजह से तो सभी अच्छे-अच्छों का निकाल हो जाता है!

दादाश्री : सारे निकाल आ जाते हैं। हमारा एक-एक शब्द जो है वह सभी का जल्दी निकाल करवानेवाला है, वह आखिर में मोक्ष में ले जाएगा। 'एडजस्ट एवरीव्हेर!'

प्रश्नकर्ता : अभी तक जहाँ पसंद था वहाँ सभी एडजस्ट होते थे जबकि आपसे तो ऐसा समझ में आया कि जहाँ नापसंद हो वहाँ तू जल्दी एडजस्ट हो जा।

दादाश्री : 'एडजस्ट एवरीव्हेर' होना है।

तर जाएँ यदि 'ज्ञान' रखें हृदय में

शादी करने में हर्ज नहीं है। शादी करे लेकिन सोच-समझकर शादी करो, कि 'ऐसा ही निकलनेवाला है।' ऐसा समझकर बाद में शादी करो। शादी करे बगैर कोई चारा नहीं है और कोई ऐसे भाव करके आई हो कि 'मुझे दीक्षा लेनी है अथवा मुझे ब्रह्मचर्य पालन करना है,' तो बात अलग है। बाकी शादी किए बिना तो छुटकारा ही नहीं है। परंतु पहले से तय करके चौरी में शादी करें न कि, आगे ऐसा होनेवाला है तो फिर झंझट नहीं होगी, फिर अचरज नहीं होगा, इसलिए तय करके प्रवेश करना है। सुख ही है, ऐसा मानकर प्रवेश करोगी तो फिर सिर्फ परेशानी ही महसूस होगी! शादी तो दुःख का समुद्र है। सास के घर में प्रवेश करना वह क्या कोई आसान बात है! अब, किसी ही जगह पर पति अकेला होता है जब उसके माता-पिता का निधन हो गया हो!

प्रश्नकर्ता : ऐसा पसंद नहीं है, दादा। मुझे तो सास हो तो अच्छा! मेरे बच्चों को देखेगी।

दादाश्री : ओहोहो! फिर वह बोलेगी तो कड़वा भी लगेगा, नहीं?

प्रश्नकर्ता : नहीं, गलती हो तो कहें, उसमें क्या?

दादाश्री : हाँ, सास हो तो कहेगी, नहीं? तो हर्ज़ नहीं है। मज़बूत हो जाए तो हर्ज़ नहीं। मज़बूत हो जाए तो फिर मटका नहीं टूटता। मजबूत हो गया होता है! हमेशा के लिए सुख होना चाहिए। ऐसा सुख कैसे पुसाए? घड़ी भर में चेहरा उतर जाता है फिर। फ़ीकी चाय आए तो पसंद आती है या ठीक तरह से बनी हो तो?

प्रश्नकर्ता : ठीक तरह से बनी हो वही पसंद जाएगी न! फ़ीकी क्यों पसंद आएगी?

दादाश्री : एक चाय जैसी चीज़ इतनी ज़्यादा परेशान करती है! तुम कितनी चीज़ों के पीछे भागती रहोगी। इनमें से कौन सी चीज़ तुम्हें परेशान नहीं करेगी? मुझे तो कोई चीज़ परेशान नहीं करती। मीठी आए या फ़ीकी आए, तुझे जैसी आना हो वैसी आ। मैं मीठा हूँ न! बहुत मीठी आए तो मैं कहता हूँ कि मैं फ़ीकी हूँ न! कोई हर्ज़ नहीं है। आओ, कहता हूँ। तुम्हारे पास किसी प्रकार का साधन नहीं है? यह पतंग उड़ा रही हो, उसकी डोर तेरे हाथ में है न, या अपने आप डोर छूट जाए तब तू कहे, 'मेरी पतंग, मेरी पतंग' ऐसा है! डोर तुम्हारे हाथ में है तो पलट क्यों जाती है? तुम्हारे हाथ में डोर हो तो पलट जाने पर उसे खींच लो, तो वापस रेग्युलर हो जाएगी! हाथ में डोर नहीं है और कहती है, 'मेरी पतंग! मेरी पतंग!' नहीं है तुम्हारी? तुम्हारे पिताजी के हाथ में डोर है, अब वह पलट जाए तो तुरंत डोर खींच लेते हैं, वह वापस आ जाती है नहीं?

तुम पिताजी से कहती थी न, आप (धर्म की बाबत में) स्कूल बदलते रहते हैं! यहाँ जाते हैं, इधर जाते हैं, उधर जाते हैं, फिर दादा को ढूँढ लिया! तुम किसी भी स्कूल में नहीं गई? तो पढ़ाई कैसे की?

प्रश्नकर्ता : इसलिए स्कूल से कॉलेज़ जाती थी न!

दादाश्री : हाँ, लेकिन इन नये स्कूलों में नहीं गई, क्या? जहाँ परवशता चली जाए, भय न लगे, ऊपरी नहीं होते ऐसी सब स्कूलों में?

विरोधाभासी विचार डालें अंतराय

बहन, तुम्हें (शादी करने के या) दीक्षा लेने के विचार आते हैं?

प्रश्नकर्ता : कभी आते हैं और कभी नहीं आते।

दादाश्री : यानी शादी करनी है ऐसा विचार आता है, फिर शादी नहीं करनी है ऐसा विचार आता है। यानी खुद ही गुणा करती है और फिर खुद ही उसका भाग दे देती है, इसलिए आखिर में कुछ भी शेष नहीं रहता! यदि शादी करनी है तो ऐसे विचार आने देने चाहिए और फिर उसका भाग नहीं देना चाहिए और भाग देना हो तो उसका गुणा नहीं करना चाहिए। अत: ये दोनों विचार विरोधाभासी हैं। तुम्हें समझ में आई यह बात? यदि शादी करनी हो तो शादी के भाव, एक ही तरह के भाव रखने हैं। फिर वह दूसरा भाव उत्पन्न नहीं होना चाहिए और यदि दीक्षा लेनी हो तो शादी का भाव उत्पन्न ही नहीं होना चाहिए!

इस संसार में ज़्यादातर दु:ख ऐसे हैं! वर्ना, दुनिया में दु:ख तो होता होगा? यह तो खुद ही स्लेट पर गुणा करती है और खुद ही भाग दे देती है लेकिन फिर क्या रहा उसके पास?

प्रश्नकर्ता : जीरो।

दादाश्री : जीरो समझते हो तब भी अच्छा है। पर यह तो इतनी भी समझ नहीं रही न! यहाँ से आपको माटुंगा जाना हो तो सबसे पहले विचार आता है कि हम माटुंगा जाएँगे। फिर आप सोचते हो कि नहीं, छोड़ो, अभी नहीं जाना है! फिर से वापस विचार आता है कि माटुंगा जाएँगे। बाद में आप सोचें कि नहीं जाना है, तो क्या होगा? उसमें रहा क्या? अब ज़्यादातर माल ऐसा ही हो गया है! इसलिए बहन, तुम्हें समझ में आया कि अपना हिताकारी क्या और अहितकारी क्या?

घड़ी भर में कहते हैं, 'चलो खीचड़ी बनाते हैं।' थोड़ी देर बाद कहते हैं, 'नहीं, नहीं बनानी है।' तो खीचड़ी कब बनेगी? इसलिए या तो कहो, नहीं बनानी है या कहो, बनानी है! एक (किनारे) तरफ आ जाओ न! दो किनारे नहीं संभलते कभी भी! यह रोग पूरे हिन्दुस्तान में अरे, फॉरेन में भी फैल चुका है!

हमें तो यहाँ से जाना हो और न जाने का विचार आए तो कहते हैं, आपको आना है तो एक साथ आओ, तो हम तुम्हें एक तरफ इस किनारे पर ले लेंगे। वर्ना, यहाँ आना ही मत! दूसरे घर जाओ! फिर फाँसी पर जाना हो तो जाना, दूसरी झंझट नहीं वर्ना नहीं जाना, इसलिए फिर जाना ही नहीं। अत: एक ही तरफ के विचार! हमारे विचार तो एकतरफा ही होते हैं। हम सरल, मृदु-ऋजु हैं, हममें एक भी बुराई नहीं होती!

बहन, तुम्हें भूल समझ में आई न? ऐसी एक भूल कोई खत्म करे तो उसे भगवान कहते हैं! एक ही भूल जो खत्म करवा दे, उसे भगवान कहते हैं! खुद की भूल खुद से, किसी से भी खत्म नहीं होती!

तूने विरोधाभास बोला, वे ही तेरे अंतराय हैं! अब उसका फल आने तक वह शांत नहीं बैठेगा! ये अंतराय जल्दी टूटें इसलिए हम तुम्हें विधि कर देंगे। अंतराय यानी कुदरत में हस्तक्षेप करना, उसे अंतराय कहते हैं! सब्ज़ी लेने जाना है या नहीं जाना है ऐसे दोतरफा विचार आते हैं न?

ये सब्जीवाली होती है वह मुरझाई हुई, पककर लाल हो गई हों ऐसी सब्जियाँ बेच रही हों, तो हमारे मन में ऐसा लगता है कि ऐसी सब्जियाँ कौन खरीदेगा? तो मैं इस तरह स्टडी करने के लिए वहाँ खड़ा रहता था, तब एक घंटे-डेढ़ घंटे हो जाए, तो एक ग्राहक आकर सब ले जाता था। क्योंकि नियम कैसा है कि जो बेचने बैठता है उसका कोई माल पड़ा नहीं रहता! क्या

मार्केट में आप जाँच-पड़ताल नहीं करते? अच्छा माल कभी-कभी पड़ा रह जाता है लेकिन खराब तो बिक ही जाता है! यानी इस मार्केट में जैसा भी माल हो बिक जाता है, तो दुनिया में यह माल बिके बिना रह जाएगा क्या? ये तो आपके अंतराय कर्म बाधा डालते हैं! अब अंतराय मत डालना और पढ़ाई करना, आराम से पढ़ना। चिंता करने की कोई ज़रूरत नहीं है! कभी भी किसी लड़की की शादी के लिए किसी लड़के को नया जन्म देना पड़ता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं, जन्म हो ही चुका होता है।

दादाश्री : यदि जन्म देना होता न, तब तो शादी हो ही नहीं पाती! कब उसे जन्म देते और कब आपके दिन बदलते? लेकिन उसका जन्म हो ही चुका है न! इसलिए उसकी कोई वरीज़ (चिंता) नहीं करनी है! उसका जन्म हो ही चुका है, सिर्फ टाइमिंग की कमी है! तुम्हारे इन विरोधाभासी विचारों के कारण बहन तुम्हें अंतराय आए हैं! अब ऐसा विरोधाभास मत रखना। एक ही तरफ के विचार रखना। अन्य विरोधाभासी विचार आए तो कहना कि दादा, आपने मना किया था फिर भी ऐसा विचार आया, इसलिए माफी माँगती हूँ। ऐसा करना आएगा तुम्हें?

यह रोग तो जगत् के *लक्ष* में ही नहीं है न, कि किस रोग से गाड़ी रुकी हुई है! वह रोग जगत् के *लक्ष* में ही नहीं आता न! वह तो, ज्ञानियों को ही उस रोग के परमाणु दिखाई देते हैं!

'शादी' वह लकड़ का लड्डू

यह शादी टेम्पररी है या परमानेन्ट है?

प्रश्नकर्ता : मोक्ष न मिले तब तक तो टेम्पररी ही है न!

दादाश्री : हाँ, तब तक सब टेम्पररी जीवन है न! अब टेम्पररी जीवन में शादी भी टेम्पररी ही है न! और वह भी इस टेम्परररी शादी में भी तेरा स्वभाव उससे मिलता हो तो अच्छा, वर्ना लोग अलग नहीं हो जाते?

प्रश्नकर्ता : सभी के साथ ऐसा नहीं होता।

दादाश्री : सभी के साथ ऐसा नहीं होता, लेकिन स्वभाव न मिलता हो तब क्या करें? कोई अलग हो जाता है या तो कोई सहन करता ही रहता है! रो-रोकर किसी भी तरह से दिन निकालते हैं! ये सभी जिन्होंने शादी की है, वे बहुत आनंद में दिन बिताते होंगे, ऐसा आपको लगता है? ये मज़े करते होंगे ऐसा आपको लगता है? अरे, पाँच प्रतिशत भी मज़े नहीं करते! यह तो, शादी का लड्डू जिसने खाया वह भी पछताया और नहीं खाया वे भी पछताए। यह तो लकड़ का लड्डू है! यह तो, जिसने नहीं खाया हो उसके मन में ऐसा लगता है कि मैं शादी किए बिना रह गई! शादीशुदा को पछतावा होता रहता है। अब यदि शादी न करें तो संसार के लोग शिकायत करते हैं, कि अरे, यह शादी नहीं करती, अरे यह शादी नहीं करती। इसलिए इस जगत् में जीना बहुत मुश्किल है, क्या ऐसा नहीं लगता तुम्हें?

प्रश्नकर्ता : इसीलिए तो आपके पास आए हैं!

दादाश्री : यह अच्छा किया, वर्ना मन में ऐसा लगता कि इस सास की वजह से मेरी ज़िंदगी बिगड़ गई! इस तरह कुछ न कुछ उलझनें तो आखिर तक होती ही रहती है!

शादी खुद का डिपेन्डन्टपना (निर्भरता) ही है, वही पता नहीं है। यह तो डिपेन्डन्टपना (निर्भरता) है। भगवान महावीर इन्डिपेन्डन्ट हुए थे।

तुम्हें शादी नहीं करनी है या करनी है?

प्रश्नकर्ता : करनी है। अब किसके साथ करनी है, वह तय नहीं है, लेकिन करनी है वह तय है।

दादाश्री : फिर एक दिन वह (पत्नी) चिढ़कर कहे कि, तुम में अक्ल नहीं है, गेट आउट करे तो फिर क्या करोगे? तुम मम्मी-पापा, मम्मी-पापा करो (लाचारी दिखाओ) उससे क्या फ़ायदा होगा? वह चिढ़ जाए तब तुम क्या करोगे?

प्रश्नकर्ता : क्या करना है? सुनना है।

दादाश्री : ढ़ीले पड़ जाना है, मंद (बेचारे) बैल जैसे! बेअसर!

प्रश्नकर्ता : नो, देन आई गेट एंग्री ऑन हर (नहीं, फिर मैं उस पर गुस्सा करूँगा)। वे मुझ पर गुस्सा हो जाएँ तो फिर मैं उस पर ऐसा गुस्सा करूँगा।

दादाश्री : तो फिर एन्ड में क्या होगा? मारकर चली जाएगी। सबकुछ सोच-समझकर शादी करना। शादी करना आसान नहीं है। चार वेद पढ़ लिए हों तब शादी करना आता है। ये (फॉरेन के) लोग क्या कहते हैं? लेडी को तमाचे से जीतो। और लेडी से कहते हैं, तेरे पति को तू तमाचे से जीत! भगवान महावीर ने क्या कहा है? आप अहिंसा से जीतो, उसकी हिंसा के सामने आपकी अहिंसा! हिंसा का एक दिन अंत आएगा, अहिंसा की जीत होगी। हिंसा की जीत तो कभी हुई ही नहीं इस दुनिया में।

ऐसा कैसे कह सकते हैं हम, कि शादी करने में सुख नहीं है। ऐसा कैसे कह सकते हैं? ये लोग ऐसा कहते हैं, कि 'शादी करने में दुःख है', ऐसा हम नहीं मानते। अनुभव करेंगे तो वे भी सभी छोड़ देंगे। लक्कड का लड्डू है, खाए वे भी पछताए, न खाए वे भी पछताए।

प्रश्नकर्ता : खाने के बाद पछताना अच्छा है, फिर अफसोस नहीं रहता।

दादाश्री : हाँ, फिर अफसोस नहीं रहता।

दादा कृपा से, ठीक चले संसार

शादी वह क्या कोई चीज़ है? वह तो राह चलते हेल्पिंग है सिर्फ। शादी के कारण सभी लोग दुःखी हैं लेकिन शादी किए बिना चले, ऐसा है ही नहीं।

क्या कहती है, तुझे शादी करनी है या नहीं करनी है? तूने तो की है न!

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : शादी नहीं की! क्या बात कर रही हो! फटाफट शादी कर लो, यों ही राह देखते बैठे रहना! फिर दूसरा कोई फ्रुट देखें तो फिर वह किसी और फ्रुट को लेकर घूमता होगा! सभी तरबूज़ इतने-इतने बड़े होते हैं न, वे अच्छा देखें तो उसे साथ लेकर घूमते रहते हैं। फिर आप देखो तो आपके मन में लगेगा कि यह दूसरी को लेकर क्यों घूम रहा है, यह तो मेरा था न! अरे, नहीं है तेरा!

यह लाइन कैसी है? धोखेबाज़ लाइन है, इसलिए सावधान हो जा। तू जिससे शादी करेगी उसे मैं आशीर्वाद दूँगा और तेरा सबकुछ ठीक कर दूँगा। बिगड़ा वहाँ से दोबारा सुधार लेना। बिगड़ा हुआ तो है ही, सड़ा हुआ तो है ही लेकिन हमें उसमें सुधार करना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : अब इसे बताइए न, यह शादी करे या शादी न करे?

दादाश्री : उसकी शादी करने की इच्छा है तो शादी करने में हर्ज़ नहीं है। अभी कुछ ज़्यादा उम्र नहीं हुई है।

प्रश्नकर्ता : पच्चीस साल की है।

दादाश्री : शादी कर ले। एक ढूँढ लेना। एक तानपुरा ढूँढ लेना, फिर उसे बजाते रहना। फिर तेरी लाइन सेट कर दूँगा। तू तय करके ले आना कि मुझे इसे पति के रूप में स्वीकार करना है, बाद में बिगड़े या सुधरे, लेकिन अब इसके साथ ही जीवन बिताना है, उसके बाद मैं तुम्हें सेट कर दूँगा, अच्छी तरह से। तुम्हारी लाइफ को कैसे सुधारना है वह हमारे हाथ में है!

प्रश्नकर्ता : सबसे बड़ा डर मुझे इसका है कि यदि मैं शादी कर लूँ तो फिर मैं अपने मोक्ष का भूल न जाऊँ।

दादाश्री : नहीं भूलेगी। तू शादी करके उसे मेरे पास ले आना न, तो उसे रफू मार दूँगा चारों तरफ से। तेरे ताबे में रहे ऐसा कर दूँगा, तेरे ताबे में रहे और वह भी मोक्ष में जाए। रफू कर दूँगा। बहुत सी लड़कियों को इस तरह से ठीक कर दिया है। ठीक होना चाहिए न! दादा ठीक न करें तो और कौन ठीक करेगा?

इसलिए अब तय कर ले। ऐसा डर मत रखना कि ऐसा हो जाएगा या वैसा हो जाएगा! जो होना है वह होगा।

शादी करके निकाले सार, मोक्ष से निवारण

प्रश्नकर्ता : अभी हमारे हिन्दु समाज में जो शादियाँ होती हैं, वे माता-पिता के द्वारा तय की हुई होती हैं जो बाद में सक्सेसफुल (सफल) नहीं जाती हैं और उन लोगों को सारी ज़िंदगी सहन करना पड़ता है। तो कहते हैं, इसमें कोई रास्ता है? क्योंकि वे लोग समाज के प्रेशर (दबाव) से माता-पिता को राजी रखने के लिए ऐसी शादी करते हैं और पूरी ज़िंदगी भुगतना पड़ता है। तो ऐसा कोई रास्ता है कि ऐसा न हो?

दादाश्री : वह तो अपनी चोइस (पसंदगी) से शादी करे तो भी ऐसा होगा और माता-पिता की चोइस से शादी करे तब भी ऐसा होगा क्योंकि शादी का नाम ही है तोड़-जोड़। उसका नाम ही तोड़-जोड़ है। तोड़-जोड़ हुए बगैर रहेगा नहीं।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, हमने सुंदर डिज़ाइन की हो और वैसा तरबूज़ा उठा लाए हों...

दादाश्री : तरबूज़ा लाकर फिर काटते हैं तब अंदर से सफेद निकलता है, लाल निकलता है। क्योंकि शादी स्वयं में तोड़-जोड़ ही है। लेकिन शादी कैसे हितकारी है? क्यों अनिवार्य है? तब कहते हैं, कि वह टकरा-टकराकर डेवेलप करती है मनुष्य को। जीवमात्र को डेवलप्ड करने का साधन है शादी। टकरा-टकराकर अनुभव लेकर, एक्सपीरियन्स करके, आगे बढ़ते हैं।

प्रश्नकर्ता : यानी मोक्ष में जाने की वह भी एक सीढ़ी है क्या?

दादाश्री : वही सीढ़ी है, यही सीढ़ी है। स्त्री, वही सीढ़ी है। स्त्री के लिए पुरुष, वही सीढ़ी। मारे, लड़े, हाथापाई करे, तभी मोक्ष में जाते हैं। इस पर से सार निकालते हैं कि शादी करने जैसा नहीं है। फिर उसके बाद ऐसा बोलती है। कितनी भी मोहवाली हो न, वह तय करती है कि, 'यह शादी करने जैसा नहीं है, अरे यह संसार!' इसलिए कहता हूँ कि, शादी करने के बाद सार निकालना। सार निकालने में तोड़-जोड़ है ही फिर। अब, ये लोग सार निकालना नहीं जानते हैं। इसलिए क्या करते हैं? वे ब्लेम (दोषारोपण) करते ही रहते हैं, उससे कर्म बंधते हैं। वह ब्लेम करता रहता है, उससे कर्म बंधते हैं और फिर जानवर में ही घूमते रहते हैं अनंत (कितने ही) जन्म। सार निकालते हों न तो समझ जाते हैं कि यह सही है, प्रॉफिट निकालना है! क्या अनुभव

हुआ उसे देखना है। शादी मौज़-शौक़ के लिए नहीं है, अनुभव के लिए है। हमने सारा अनुभव ले लिया है।

लड़कियाँ पूछती हैं कि हमें शादी करनी चाहिए या नहीं करनी चाहिए? मैंने कहा, देखो, शादी किए बिना चले ऐसा नहीं है और शादी करके पछताए बिना भी चले ऐसा नहीं है। क्योंकि सबकुछ ज्ञान प्रदान करनेवाला है और यदि चल सके ऐसा हो, पहले तू यह अनुभव लेकर आई हो, तो अभी चले ऐसा हो, तो चला लेना। बाकी, 'शादी करना वह कोई गुनाह है', ऐसा नहीं है, वह ज्ञान प्रदान करनेवाली चीज़ है। उपदेश-ज्ञान देता है। तुझे ज्ञान नहीं मिला?

प्रश्नकर्ता : बहुत मिला है, दादा।

दादाश्री : हाँ और वह यों ही, यदि शादी किए बिना वह समर्पित हो गया हो, जगत् का कल्याण करने के लिए, तो मन में थोड़ा-थोड़ा चुभता है। शादी की होती तो अच्छा होता। सारी ज़िंदगी चुभता रहता। अब, यह चुभेगा ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : दादा, मैंने शादी नहीं की होती न, तो मुझे यह जगत् और यह सब क्या है, कुछ समझ में ही नहीं आया होता।

दादाश्री : इसलिए मुझे विचार आया था कि बेचारी शादी नहीं कर रही है, तो घर के सभी कहते रहते हैं कि 'शादी नहीं कर रही, शादी नहीं कर रही। मैंने उसे समझाया कि बहन, शादी करने जैसा है इस जगत् में। शादी करके पछताना तो पड़ेगा, लेकिन शादी करने जैसा तो है ही इस जगत् में। लेकिन मुझे ऐसा लगा... अभी मैंने सोचकर देखा। मैंने सोचा, ये मैंने ऐसी बात क्यों की थी? लेकिन अभी मुझे पता चला कि यह तो लाभकारी हो गया। वर्ना उसे चुभता रहता, कि यदि शादी की होती तो अच्छा होता! अब क्लीयर कट (स्पष्ट हो गया)! शादी करनेवाली है? तब कहती है, 'नो। अब ज्ञान ले लिया है।' 'शादी करने में क्या हर्ज है' वह देख लिया कि अनुभव होना चाहिए न! वर्ना मन में खटकता रहता। आप सभी को अनुभव हुए न!

प्रश्नकर्ता : हुए हैं, दादा।

दादाश्री : इन्हें ऐसा विचार आता था कि हम ब्राह्मण से शादी करेंगे इसलिए ऐसी मुसीबतें आएँगी! तो अब जैन से शादी की, तो अब उसमें भी पता चल गया न! वह भी अनुभव ले लिया न, नहीं? यह भी अनुभव तो मिलता ही है न!

प्रश्नकर्ता : अब तो शादी करने का निश्चय ही बंद कर दिया है।

दादाश्री : हमने भी हीराबा के साथ सारा अनुभव ले लिया। फिर सार निकाला कि भाई, अब अनुभव ले लिया। लेकिन यदि टोक-टोक करेंगे, तो फिर से थोड़े बहुत बखेड़े होते रहेंगे। उसके बजाय हिसाब साफ करो न! यानी क्लीयर कट, बस इतना ही। दुर्भाव नहीं होता, उनके प्रति कभी भी! वे गलती करें, तब भी भाव नहीं बिगड़ता। किसलिए अपना बिगाड़ें? एक जनम के लिए हिसाब बँधा है तो वह हिसाब पूरा करना है न! जब तक पूरा नहीं होता तब तक और न हो सके तो उसे छोड़ देना है। अँगारा कब तक पकड़कर रखना है? जब तक पकड़कर रखने की शक्ति हो तब तक और जल जाए तो... सब की सीमा होती है या नहीं होती?

प्रश्नकर्ता : सही है।

दादाश्री : शादी करके पछताना, लेकिन

पछताने से ज्ञान होता है। अनुभवज्ञान होना चाहिए न? यों ही किताब पढ़ने से क्या अनुभवज्ञान होता है? किताब पढ़ने से वैराग्य आता है क्या? वैराग्य तो पछतावा होने पर आता है।

यह शादी होती है तब से मेरिड लाइफ (विवाहित जीवन) का *गलन* होता है। तो एक दिन सारा ही (पूरा) *गलन* हो जाता है।

इन दोनों में फर्क कहाँ?

प्रश्नकर्ता : विवाहित हों उन लोगों को ज्ञान देर से आता है न? और जो ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, उन लोगों को ज्ञान जल्दी आता है न?

दादाश्री : नहीं, ऐसा कुछ नहीं है। विवाहित हो और यदि ब्रह्मचर्य व्रत ले, तो आत्मा का सुख कैसा है वह उसे पूर्ण रूप से समझ में आता है। वर्ना तब तक सुख विषय में से आता है या आत्मा में से आता है वह समझ में नहीं आता और ब्रह्मचर्य व्रत हो तो उसे अंदर आत्मा का अपार सुख बरतता है! मन अच्छा रहता है और शरीर भी अच्छा रहता है।

प्रश्नकर्ता : तो दोनों की ज्ञान की अवस्था समान होती है कि उसमें अंतर होता है, परिणीतों की और ब्रह्मचर्यवालों की?

दादाश्री : ऐसा है न, ब्रह्मचर्यव्रतवाला कभी नहीं गिरता। उसे कैसी भी मुश्किल आए तो भी वह नहीं गिरता। फिर वह 'सेफसाइड' (सलामती) कहलाती है।

इस विज्ञान में पूछकर करना

फिर भी यह विज्ञान किसी को भी, विवाहितों को भी मोक्ष में ले जाएगा लेकिन ज्ञानी की आज्ञानुसार चलना चाहिए। अगर कोई तेज़ दिमागवाला हो और वह कहे, 'साहब, मैं दूसरी शादी करना चाहता हूँ।' यदि तुझे शादी करनी हो तो मेरी आज्ञा लेकर शादी करना और फिर उस अनुसार वर्तन करना। तेरी ताक़त होनी चाहिए। पहले क्या शादियाँ नहीं करते थे? भरत राजा की तेरह सौ रानियाँ थी, फिर भी मोक्ष में गए! यदि रानियाँ बाधक होतीं तो मोक्ष में जा सकते थे क्या? तो बाधक क्या है? अज्ञान बाधक है। इतने सारे लोग हैं, उन्हें कहा होता कि स्त्री को छोड़ दो, तो वे सभी कब स्त्रियों को छोड़ते? और कब उनका हल आता? इसलिए कहा, स्त्रियाँ भले रहीं और दूसरी शादी करनी हो तो मुझसे पूछकर शादी करना वर्ना, पूछे बगैर शादी मत करना। देखो छूट दी है न सारी!

आखिर ज्ञान से ही मोक्ष

प्रश्नकर्ता : शादी करके जल्दी मोक्ष में जा सकते हैं या शादी किए बिना जल्दी मोक्ष में जा सकते हैं? इसमें जल्दी शब्द पर जोर दिया गया है!

दादाश्री : शादी करके भी मोक्ष में जा सकते हैं और शादी किए बिना भी मोक्ष में जा सकते हैं। बाकी जल्दी, वह तो ऐसा है न, जल्दी से कोई लेना-देना नहीं है! सिर्फ शादी किए बिना हो तो ईज़ी (सरल) लगता है। 'ईज़िली' (सरलता से) मोक्ष होता है और शादी के बाद वह 'अनईज़ी' (कठिनाई से) मोक्ष होता है! मोक्ष तो दोनों का होगा!

हम कहें, मुझे ये कपड़े नहीं पहनने हैं, मुझे तो एक बंडी ही चलेगी। तो हमारी उतनी *उपाधि* (परेशानी) कम हुई न! और कपड़े पर कपड़े पहनते रहें तो उतनी *उपाधि* बढ़ेगी न! ज्ञान हो तो मोक्ष में जा सकते हैं, लेकिन शादी करके या शादी किए बिना, वह तो उसका हिसाब होता है।

जय सच्चिदानंद

क्लेश बगैर का घर, मंदिर जैसा

जहाँ क्लेश हो, वहाँ भगवान का वास नहीं रहता है। इसलिए आप भगवान से कहना 'साहब, आप मंदिर में रहना, मेरे घर नहीं आइएगा!' हम और अधिक मंदिर बनवाएँगे, परंतु घर मत आइएगा!' जहाँ क्लेश न हो, वहाँ भगवान का वास निश्चित है। उसकी मैं आपको गारन्टी देता हूँ और क्लेश तो बुद्धि और समझ से खत्म किया जा सके ऐसा है। मतभेद टले उतनी जागृति तो प्राकृतिक गुण से भी आ सकती है, उतनी बुद्धि भी आ सके ऐसा है। जान लिया, उसका नाम कि किसी के साथ मतभेद न पड़े। मति पहुँचती नहीं, इसलिए मतभेद होते हैं। मति फुल पहुँचे, तो मतभेद नहीं होंगे। मतभेद, वे टकराव हैं। वीकनेस हैं।

कोई झंझट हो गई हो तो आप थोड़ी देर चित्त को स्थिर करो और विचार करो तो आपको सूझ पड़ेगी। क्लेश हुआ तो भगवान तो चले जाएँगे या नहीं चले जाएँगे?

प्रश्नकर्ता : चले जाएँगे।

दादाश्री : भगवान कुछ लोगों के यहाँ से जाते ही नहीं, परंतु क्लेश हो रहा हो, तब कहते हैं, 'चलो यहाँ से, हमें यहाँ अच्छा नहीं लगेगा।' इस कलह में मुझे अच्छा नहीं लगेगा, इसलिए देरासर और मंदिरों में जाते हैं। इन मंदिरों में भी फिर क्लेश करते हैं। मुकट, ज़ेवर ले जाते हैं तब भगवान कहते हैं कि यहाँ से भी चलो अब। तो भगवान भी तंग आ गए हैं।

अंग्रेजों के समय में कहते थे न कि,

'देव गया डुंगरे, पीर गया मक्के।'

(देवी-देवता गए पहाड़ पर और पीर चले गए मक्का।)

अपने घर में क्लेश रहित जीवन जीना चाहिए। इतनी तो आप में कुशलता होनी चाहिए। दूसरा कुछ नहीं आए तो उसे समझाना चाहिए कि क्लेश होगा तो अपने घर में से भगवान चले जाएँगे, इसलिए तू निश्चय कर कि 'हमारे यहाँ क्लेश नहीं करना है।' और आप निश्चित करना कि क्लेश नहीं करना है। निश्चित करने के बाद क्लेश हो जाए तो समझना कि यह आपकी सत्ता के बाहर हुआ है। इसीलिए वह क्लेश कर रहा हो तब भी आपको ओढ़कर सो जाना चाहिए। वह भी थोड़ी देर बाद सो जाएगा, लेकिन आप भी सामने ज़वाब देने लगें तो?

मुंबई में एक ऊँचे संस्कारी कुटुंब की बहन को मैंने पूछा कि घर में क्लेश तो नहीं होता न? तब उस बहन ने कहा, 'रोज़ सुबह क्लेश के नाश्ते ही होते हैं!' मैंने कहा, 'तब आपके नाश्ते के पैसे बचे, नहीं?' बहन ने कहा, 'नहीं, वह भी वापस ब्रेड निकालनी, और ब्रेड पर मक्खन चुपड़ते जाना।' मतलब फिर क्लेश भी चलता है और नाश्ता भी चलता है! अरे, किस तरह के जीव हो?

प्रश्नकर्ता : कुछ लोगों के घर में लक्ष्मी ही उस प्रकार की होगी इसलिए क्लेश होता होगा?

दादाश्री : यह लक्ष्मी के कारण ही ऐसा होता है। यदि लक्ष्मी निर्मल हो, तो सब अच्छा रहता है, मन अच्छा रहता है। यह लक्ष्मी अनिष्टवाली घर में घुसी है, उससे क्लेश होता है। हमने बचपन में ही निश्चित कर लिया था कि हो सके तब तक खोटी लक्ष्मी घुसने ही नहीं देनी है। फिर भी संजोगाधीन घुस जाए तो उसे धंधे में ही रहने देना है, घर में नहीं घुसने देना है, इसलिए आज छियासठ वर्ष हुए लेकिन खोटी लक्ष्मी घुसने नहीं दी है, और घर में कभी भी क्लेश खड़ा हुआ नहीं है। घर में निश्चित किया हुआ था कि इतने पैसे से घर चलाना है। व्यापार लाखों रुपया कमाता है, परंतु यह पटेल सर्विस करने जाएँ तो क्या तन्ख्वाह मिलेगी? बहुत हुआ तो छः सौ-सात सौ रुपये मिलेंगे। व्यापार, वह तो पुण्य का खेल है। मुझे नौकरी में जितने मिलते, उतने ही पैसे घर में खर्च कर सकते हैं, दूसरे तो व्यापार में ही रहने देने चाहिए। इन्कम टैक्सवाले की चिट्ठी आए तो आपको कहना चाहिए कि, 'वह जो रक़म थी वह भर दो।' कब कौन-सा 'अटैक' हो उसका कोई ठिकाना नहीं और यदि वे पैसे खर्च कर दिए तो वहाँ इन्कम टैक्सवालों का 'अटैक' आया तो आपके यहाँ वो वाला 'अटैक' आएगा! सभी जगह अटैक घुस गए हैं न! यह जीवन कैसे कहलाए? आपको क्या लगता है? भूल लगती है या नहीं लगती? वह हमें भूल मिटानी है।

क्लेश न हो ऐसा निश्चित करो न! तीन दिन के लिए तो निश्चित करके देखो न! प्रयोग करने में क्या परेशानी है? तीन दिन के उपवास करते हैं न, तबियत के लिए? वैसे ही यह भी निश्चित तो करके देखो। घर में आप सब लोग इकट्ठे होकर निश्चित करो कि 'दादा बात करते थे, वह बात मुझे पसंद आई है, तो आज से हम क्लेश मिटाएँ।' फिर देखो।

जहाँ क्लेश नहीं वहाँ यथार्थ जैन, यथार्थ वैष्णव, यथार्थ शैव धर्म हैं। जहाँ धर्म की यथार्थता है, वहाँ क्लेश नहीं होता। ये घर-घर क्लेश होते हैं तो वहाँ धर्म कहाँ गया?

संसार चलाने के लिए जिस धर्म की आवश्यकता है कि क्या करने से क्लेश नहीं हो, उतना ही यदि आ जाए तो भी, धर्म प्राप्त किया, ऐसा माना जाएगा।

क्लेश रहित जीवन जीना, वही धर्म है। हिन्दुस्तान में, यहाँ संसार में ही खुद का घर स्वर्ग बनेगा तो मोक्ष की बात करनी चाहिए, नहीं तो मोक्ष की बात करनी नहीं, स्वर्ग नहीं तो स्वर्ग के नज़दीक का तो होना ही चाहिए न? क्लेश रहित होना चाहिए, इसलिए शास्त्रकारों ने कहा है कि, 'जहाँ किंचित् मात्र क्लेश है वहाँ धर्म नहीं है।' जेल की अवस्था हो वहाँ डिप्रेशन नहीं, और महल की अवस्था हो वहाँ एलिवेशन नहीं, ऐसा होना चाहिए। क्लेश रहित जीवन हुआ इसलिए मोक्ष के नज़दीक आया, वह इस भव में सुखी होगा। मोक्ष हरएक को चाहिए। क्योंकि बंधन किसीको पसंद नहीं है। परंतु क्लेश रहित हुआ, तब समझना कि अब नज़दीक में अपना स्टेशन है मोक्ष का।

(परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित)

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम अडालज में

राष्ट्रीय हिन्दी शिविर - वर्ष 2026

3 जून	(बुध)	सुबह 10-30 से 12	- आप्तपुत्र **सत्संग**
		शाम 5-30 से 7	- **हिन्दी आप्तवाणी पुस्तक पर पारायण** (पेज नं. 28)
4 जून	(गुरु)	सुबह 10 से 12	- आप्तपुत्र **सत्संग**
		शाम 5 से 8	- **ज्ञानविधि**
5 जून	(शुक्र)	सुबह 10-30 से 12-30	- **शिविरार्थीओं के लिए पूज्यश्री के चरणस्पर्श दर्शन**
		शाम 5-30 से 7	- **सत्संग** (टोपिक - पांच आज्ञा का महत्व)
		रात 9 से 10-30	- **श्री सीमंधर स्वामी की छोटी प्रतिमाओं की प्राणप्रतिष्ठा**
6 जून	(शनि)	सुबह 10-30 से 12	- **सत्संग** (टोपिक - PMHT)
		शाम 5-30 से 7	- **सत्संग** (टोपिक - गर्वरस)
7 जून	(रवि)	सुबह 10-30 से 12 और शाम 5-30 से 7 - प्रश्नोत्तरी **सत्संग**	

सूचना : यह शिविर गुजराती भाषा नहीं जानने वाले मुमुक्षु-महात्माओं के लिए साल में एक बार हिन्दी में विशेष रूप से आयोजित की जाती है। शिविर में भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन जानकारी **Akonnect** ऐप के द्वारा दी जाएगी।

अडालज में अविवाहित युवकों के लिए आप्तपुत्रों द्वारा ब्रह्मचर्य शिविर दि. 26-28 जून 2026

मोबाइल-इन्टरनेट, विषय-विकार के कुसंग से कैसे छुटकारा पाएं, उसकी सच्ची समझ प्राप्त करने हेतु यह शिविर आयोजित की गई है। जो युवक इस शिविर में भाग लेना चाहते है, उसकी उम्र 21 से 30 के बीच और आत्मज्ञान लिए कम से कम 1 साल हुआ होना जरूरी है। आपका रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है। कृपया अधिक जानकारी और रजिस्ट्रेशन के लिए ईस नंबर 9033501571 पर संपर्क करें।

पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए भारत में टी.वी. चैनल पर...

- **'साधना'** पर हर रोज़ सुबह 7-50 से 8-15 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 और दोपहर 3 से 4 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-45 (मराठी में)
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर हर रोज़ दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 (कन्नड़ा में)
- **'दूरदर्शन चंदना'** पर हर रोज़ शाम 7 से 7-30 (कन्नड़ा में)
- **'दूरदर्शन गिरनार'** पर रोज़ सुबह 7-30 से 8-30, रात 9-30 से 10-30 (गुजराती में)
- **'वालम'** पर हर रोज़ शाम 6 से 7 (सिर्फ गुजरात राज्य में) (गुजराती में)
- **'धर्म संदेश'** पर हर रोज़ सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : 9328661166-77, **राजकोट** : 9924343478, **भूज** : 9924345588, **मुंबई** : 9323528901, **अंजार** : 9924346622, **मोरबी** : 9924341188, **सुरेन्द्रनगर** : 9737048322, **अमरेली** : 9924344460, **वडोदरा** : 9574001557, **गोधरा** : 9723707738, **जामनगर** : 9924343687, **भावनगर** : 9313882288, **अहमदाबाद (दादा दर्शन)** : 9574001445, **वडोदरा (दादा मंदिर)** : 9924343335, **दिल्ली** : 9810098564, **बैंगलूर** : 9590979099, **कोलकता** : 9830080820
यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

पूज्यश्री का U.K. सत्संग प्रवास : ता. 25 मार्च से ता. 15 अप्रैल 2026

लेस्टर : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 25 से 27 मार्च 2026

स्कॉटलेन्ड : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 28 मार्च से 1 अप्रैल 2026

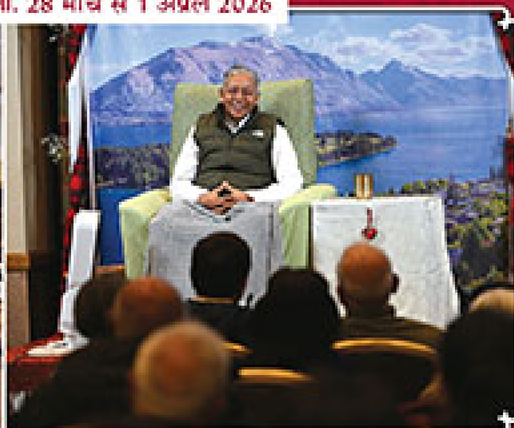

हैरो : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 3 से 6 अप्रैल 2026

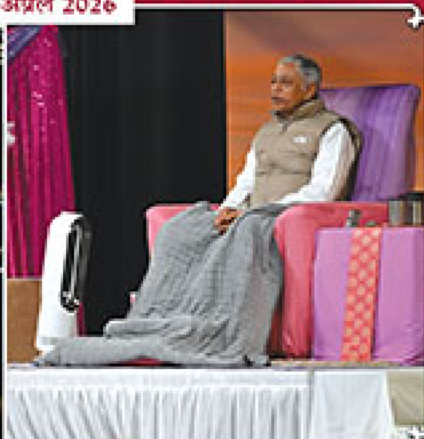

मई 2026
वर्ष-21 अंक-7
अखंड क्रमांक - 247

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Licensed to Post Without Pre-payment
No. PMG/NG/036/2024-2026
Valid up to 31-12-2026
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

आखिर ज्ञान से ही मोक्ष

शादी करके भी मोक्ष में जा सकते हैं और शादी किए बिना भी मोक्ष में जा सकते हैं। सिर्फ शादी किए बिना हो तो ईज़ी (सरल) लगता है। 'ईज़िली' (सरलता से) मोक्ष होता है और शादी के बाद वह 'अनईज़ी' (कठिनाई से) मोक्ष होता है! मोक्ष तो दोनों का होगा! हम कहें, मुझे ये कपड़े नहीं पहनने हैं, मुझे तो एक बंडी ही चलेगी, तो हमारी उतनी उपाधि (परेशानी) कम हुई न! और कपड़े पर कपड़े पहनते रहें तो उसकी उतनी उपाधि बढ़ेगी न! ज्ञान हो तो मोक्ष में जा सकते हैं, लेकिन शादी करके या शादी किए बिना, वह तो उसका हिसाब होता है।

– दादाश्री

DBF • Adalaj

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road, At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.